قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

وَقَالَ الَّذِيْنَ

पारा - 19

eParah

وَقَالَ	الَّذِيْنَ	لَا يَرْجُوْنَ	لِقَآءَنَا	لَوْلَآ	اُنْزِلَ	عَلَيْنَا
और कहा	उन लोगों ने जो	नहीं वो उम्मीद रखते	हमारी मुलाक़ात की	क्यों नहीं	उतारे गए	हम पर

الْمَلٰٓئِكَةُ	اَوْ	نَرٰى	رَبَّنَا ؕ	لَقَدِ	اسْتَكْبَرُوْا	فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ
फ़रिश्ते	या	हम देखते	अपने रब को	अलबत्ता तहक़ीक़	उन्होंने तकब्बुर किया	अपने दिलों में

وَعَتَوْ	عُتُوًّا	كَبِيْرًا ﴿21﴾	يَوْمَ	يَرَوْنَ	الْمَلٰٓئِكَةَ	لَا بُشْرٰى
और उन्होंने सरकशी की	सरकशी	बहुत बड़ी	जिस दिन	वो देखेंगे	फ़रिश्तों को	नहीं कोई ख़ुशख़बरी

يَوْمَئِذٍ	لِّلْمُجْرِمِيْنَ	وَيَقُوْلُوْنَ	حِجْرًا	مَّحْجُوْرًا ﴿22﴾	وَقَدِمْنَآ
उस दिन	मुजरिमों के लिए	और वो (मुजरिम) कहेंगे	एक आड़ हो	मज़बूत	और आऐंगे हम

اِلٰى مَا	عَمِلُوْا	مِنْ عَمَلٍ	فَجَعَلْنٰهُ	هَبَآءً	مَّنْثُوْرًا ﴿23﴾
तरफ़ उसके जो	उन्होंने अमल किए	कोई भी अमल	तो हम बना देंगे उसे	ग़ुबार	परागंदा

اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ	يَوْمَئِذٍ	خَيْرٌ	مُّسْتَقَرًّا	وَّاَحْسَنُ	مَقِيْلًا ﴿24﴾
जन्नत वाले	उस दिन	बेहतर होंगे	ठिकाने में	और ज़्यादा अच्छे	दोपहर गुज़ारने की जगह में

وَيَوْمَ	تَشَقَّقُ	السَّمَآءُ	بِالْغَمَامِ	وَنُزِّلَ	الْمَلٰٓئِكَةُ	تَنْزِيْلًا ﴿25﴾
और जिस दिन	फट जाएगा	आसमान	साथ बादलों के	और उतारे जाऐंगे	फ़रिश्ते	उतारा जाना

اَلْمُلْكُ	يَوْمَئِذِ	الْحَقُّ	لِلرَّحْمٰنِ ؕ	وَكَانَ	يَوْمًا	عَلَى الْكٰفِرِيْنَ
बादशाहत	उस दिन	बरहक़ है	रहमान के लिए	और होगा	वो दिन	काफ़िरों पर

عَسِيْرًا ﴿26﴾	وَيَوْمَ	يَعَضُّ	الظَّالِمُ	عَلٰى يَدَيْهِ	يَقُوْلُ
बहुत सख़्त	और जिस दिन	दांतों से काटेगा	ज़ालिम	अपने दोनों हाथों पर	वो कहेगा

يٰلَيْتَنِيْ	اتَّخَذْتُ	مَعَ	الرَّسُوْلِ	سَبِيْلًا ﴿27﴾	يٰوَيْلَتٰى	لَيْتَنِيْ	لَمْ
ऐ काश कि मैं	बना लेता मैं	साथ	रसूल के	कुछ रास्ता	हाय अफ़सोस मुझ पर	काश कि मैं	ना

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَتَّخَذْ	فُلَانًا	خَلِيْلًا ﴿28﴾	لَقَدْ	اَضَلَّنِيْ	عَنِ الذِّكْرِ	بَعْدَ
मैं बनाता	फ़ुलां को	दिली दोस्त	अलबत्ता तहक़ीक़	उसने भटका दिया मुझे	ज़िक्र (क़ुरआन) से	बाद इसके कि

اِذْ	جَآءَنِيْ ؕ	وَ كَانَ	الشَّيْطٰنُ	لِلْاِنْسَانِ	خَذُوْلًا ﴿29﴾	وَ قَالَ
जब	वो आया मेरे पास	और है	शैतान	इंसान को	छोड़ देने वाला	और कहेगा

الرَّسُوْلُ	يٰرَبِّ	اِنَّ	قَوْمِي	اتَّخَذُوْا	هٰذَا	الْقُرْاٰنَ	مَهْجُوْرًا ﴿30﴾
रसूल	ऐ मेरे रब	बेशक	मेरी क़ौम ने	बना लिया था	इस	क़ुरआन को	छोड़ा हुआ

وَ كَذٰلِكَ	جَعَلْنَا	لِكُلِّ نَبِيٍّ	عَدُوًّا	مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ	وَ كَفٰى
और इसी तरह	बनाया हमने	हर नबी के लिए	दुश्मन	मुजरिमों में से	और काफ़ी है

بِرَبِّكَ	هَادِيًا	وَّ نَصِيْرًا ﴿31﴾	وَ قَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَوْلَا
आपका रब	हिदायत देने वाला	और मदद करने वाला	और कहा	उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया	क्यों नहीं

ع

نُزِّلَ	عَلَيْهِ	الْقُرْاٰنُ	جُمْلَةً	وَّاحِدَةً ۚ	كَذٰلِكَ ۚ	لِنُثَبِّتَ	بِهٖ
नाज़िल किया गया	उस पर	क़ुरआन	इकट्ठा	एक ही बार	इसी तरह	ताकि हम मज़बूत कर दें	साथ उसके

فُؤَادَكَ	وَ رَتَّلْنٰهُ	تَرْتِيْلًا ﴿32﴾	وَلَا	يَاْتُوْنَكَ	بِمَثَلٍ	اِلَّا
दिल आपका	और ठहर-ठहर कर पढ़ा हमने उसे	ठहर-ठहर कर पढ़ना	और नहीं	वो लाते आपके पास	कोई मिसाल	मगर

جِئْنٰكَ	بِالْحَقِّ	وَ اَحْسَنَ	تَفْسِيْرًا ﴿33﴾ ؕ	اَلَّذِيْنَ	يُحْشَرُوْنَ
लाते हैं हम आपके पास	हक़ को	और बेहतरीन	तफ़सीर/वज़ाहत को	वो लोग जो	इकट्ठे किए जाऐंगे

عَلٰى وُجُوْهِهِمْ	اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ	اُولٰٓئِكَ	شَرٌّ	مَّكَانًا	وَّ اَضَلُّ
अपने चेहरों के बल	तरफ़ जहन्नम के	यही लोग	बदतरीन हैं	मक़ाम के ऐतबार से	और ज़्यादा भटके हुए

ع 3 14 1

سَبِيْلًا ﴿34﴾ ع	وَ لَقَدْ	اٰتَيْنَا	مُوْسَى	الْكِتٰبَ	وَ جَعَلْنَا	مَعَهٗٓ
रास्ते के ऐतबार से	और अलबत्ता तहक़ीक़	दी हमने	मूसा को	किताब	और बनाया हमने	साथ उसके

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَخَاهُ	هٰرُوْنَ	وَزِيْرًا ﴿35﴾	فَقُلْنَا	اذْهَبَآ	اِلَى الْقَوْمِ	الَّذِيْنَ
उसके भाई	हारून को	मददगार	फिर कहा हमने	दोनों जाओ	तरफ़ उस क़ौम के	जिन्होंने

كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا ۭ	فَدَمَّرْنٰهُمْ	تَدْمِيْرًا ﴿36﴾ ۭ	وَقَوْمَ	نُوْحٍ	لَّمَّا
झुठलाया	हमारी आयात को	तो हलाक कर दिया हमने उन्हें	हलाक करना	और क़ौमे	नूह	जब

كَذَّبُوا	الرُّسُلَ	اَغْرَقْنٰهُمْ	وَجَعَلْنٰهُمْ	لِلنَّاسِ	اٰيَةً ۭ	وَاَعْتَدْنَا
उन्होंने झुठलाया	रसूलों को	ग़र्क़ कर दिया हमने उन्हें	और बना दिया हमने उन्हें	लोगों के लिए	एक निशानी	और तैयार कर रखा है हमने

لِلظّٰلِمِيْنَ	عَذَابًا	اَلِيْمًا ﴿37﴾ ۚ	وَّعَادًا	وَّثَمُوْدَا	وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ
ज़ालिमों के लिए	अज़ाब	दर्दनाक	और आद	और समूद	और कुएं वाले

وَقُرُوْنًۢا	بَيْنَ ذٰلِكَ	كَثِيْرًا ﴿38﴾	وَكُلًّا	ضَرَبْنَا	لَهُ	الْاَمْثَالَ ۡ
और क़ौमें	दर्मियान उनके	बहुत सी	और हर एक को	बयान कीं हमने	उसके लिए	मिसालें

وَكُلًّا	تَبَّرْنَا	تَتْبِيْرًا ﴿39﴾	وَلَقَدْ	اَتَوْا	عَلَى الْقَرْيَةِ	الَّتِيْٓ
और हर एक को	हलाक किया हमने	हलाक करना	और अलबत्ता तहक़ीक़	वो आ चुके	उस बस्ती पर	जिस पर

اُمْطِرَتْ	مَطَرَ	السَّوْءِ ۭ	اَفَلَمْ	يَكُوْنُوْا	يَرَوْنَهَا ۚ	بَلْ	كَانُوْا
बरसाई गई थी	बारिश	बुरी	क्या भला नहीं	थे वो	वो देखते उसे	बल्कि	थे वो

لَا يَرْجُوْنَ	نُشُوْرًا ﴿40﴾	وَاِذَا	رَاَوْكَ	اِنْ	يَّتَّخِذُوْنَكَ	اِلَّا
ना वो उम्मीद रखते	जी उठने की	और जब	वो देखते हैं आपको	नहीं	वो बनाते आपको	मगर

هُزُوًا ۭ	اَهٰذَا	الَّذِيْ	بَعَثَ	اللّٰهُ	رَسُوْلًا ﴿41﴾	اِنْ	كَادَ
मज़ाक़	क्या ये है	वो जिसे	भेजा	अल्लाह ने	रसूल बनाकर	बेशक	वो क़रीब था

لَيُضِلُّنَا	عَنْ اٰلِهَتِنَا	لَوْلَآ	اَنْ	صَبَرْنَا	عَلَيْهَا ۭ
कि वो भटका देता हमें	हमारे इलाहों से	अगर ना होती	ये (बात) कि	सब्र करते/जमे रहते हम	उन पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَسَوْفَ	يَعْلَمُوْنَ	حِيْنَ	يَرَوْنَ	الْعَذَابَ	مَنْ	اَضَلُّ
और अनक़रीब	वो जान लेंगे	जिस वक़्त	वो देखेंगे	अज़ाब	कि कौन	ज़्यादा भटका हुआ है

سَبِيْلًا ﴿42﴾	اَرَءَيْتَ	مَنِ	اتَّخَذَ	اِلٰهَهٗ	هَوٰىهُ ؕ	اَفَاَنْتَ
रास्ते से	क्या देखा आपने (उसे)	जिसने	बना लिया	इलाह अपना	अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को	क्या भला आप

تَكُوْنُ	عَلَيْهِ	وَكِيْلًا ﴿43﴾	اَمْ	تَحْسَبُ	اَنَّ	اَكْثَرَهُمْ	يَسْمَعُوْنَ
आप होंगे	उस पर	ज़िम्मेदार	या	आप समझते हैं	कि बेशक	अक्सर उनके	वो सुनते हैं

اَوْ	يَعْقِلُوْنَ ؕ	اِنْ	هُمْ	اِلَّا	كَالْاَنْعَامِ	بَلْ	هُمْ	اَضَلُّ
या	वो समझते हैं	नहीं हैं	वो	मगर	जानवरों की तरह	बल्कि	वो	ज़्यादा भटके हुए हैं

ع 4 10 2

سَبِيْلًا ﴿44﴾ ع	اَلَمْ	تَرَ	اِلٰى رَبِّكَ	كَيْفَ	مَدَّ	الظِّلَّ ۚ	وَلَوْ
रास्ते से	क्या नहीं	आपने देखा	तरफ़ अपने रब के	किस तरह	उसने फैला दिया	साये को	और अगर

شَآءَ	لَجَعَلَهٗ	سَاكِنًا ۚ	ثُمَّ	جَعَلْنَا	الشَّمْسَ	عَلَيْهِ	دَلِيْلًا ﴿45﴾
वो चाहता	अलबत्ता वो बना देता उसे	साकिन/ठहरा हुआ	फिर	बनाया हमने	सूरज को	उस पर	दलील/रहनुमा

ثُمَّ	قَبَضْنٰهُ	اِلَيْنَا	قَبْضًا	يَسِيْرًا ﴿46﴾	وَهُوَ	الَّذِىْ	جَعَلَ
फिर	समेट लिया हमने उसे	अपनी तरफ़	समेटना	आहिस्ता-आहिस्ता	और वो ही है	जिसने	बनाया

لَكُمُ	الَّيْلَ	لِبَاسًا	وَّالنَّوْمَ	سُبَاتًا	وَّجَعَلَ	النَّهَارَ	نُشُوْرًا ﴿47﴾
तुम्हारे लिए	रात को	लिबास	और नींद को	बाइसे आराम	और उसने बनाया	दिन को	उठने का वक़्त

وَهُوَ	الَّذِىْٓ	اَرْسَلَ	الرِّيٰحَ	بُشْرًا	بَيْنَ يَدَىْ	رَحْمَتِهٖ ۚ
और वो ही है	जिसने	भेजा	हवाओं को	ख़ुशख़बरी बनाकर	आगे-आगे	अपनी रहमत के

وَاَنْزَلْنَا	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً	طَهُوْرًا ﴿48﴾	لِّنُحْيِۦَ	بِهٖ	بَلْدَةً
और उतारा हमने	आसमान से	पानी	पाक	ताकि हम ज़िंदा करें	साथ उसके	शहर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَّيْتًا	وَّنُسْقِيَهٗ	مِمَّا	خَلَقْنَآ	اَنْعَامًا	وَّاَنَاسِيَّ	كَثِيْرًا ﴿49﴾
मुर्दा को	और हम पिलाऐं उसे	उनमें से जो	पैदा किए हमने	मवेशी	और इंसान	बहुत से

وَلَقَدْ	صَرَّفْنٰهُ	بَيْنَهُمْ	لِيَذَّكَّرُوْا ۖ	فَاَبٰٓى	اَكْثَرُ	النَّاسِ
और अलबत्ता तहक़ीक़	फेर-फेर कर लाए हैं हम उसे	दर्मियान उनके	ताकि वो नसीहत पकड़ें	तो इंकार किया	अक्सर	लोगों ने

اِلَّا	كُفُوْرًا ﴿50﴾	وَلَوْ	شِئْنَا	لَبَعَثْنَا	فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ	نَّذِيْرًا ﴿51﴾ ۖ
सिवाए	नाशुक्री करने के	और अगर	चाहते हम	अलबत्ता भेज देते हम	हर बस्ती में	एक डराने वाला

فَلَا	تُطِعِ	الْكٰفِرِيْنَ	وَجَاهِدْهُمْ	بِهٖ	جِهَادًا	كَبِيْرًا ﴿52﴾
तो ना	आप इताअत कीजिए	काफ़िरों की	और जिहाद कीजिए उनसे	साथ इसके	जिहाद	बहुत बड़ा

وَهُوَ	الَّذِيْ	مَرَجَ	الْبَحْرَيْنِ	هٰذَا	عَذْبٌ	فُرَاتٌ	وَّهٰذَا
और वो ही है	जिसने	मिला दिया	दो समुन्दरों को	ये	मीठा है	ख़ुश मज़ा	और ये

مِلْحٌ	اُجَاجٌ ۚ	وَجَعَلَ	بَيْنَهُمَا	بَرْزَخًا	وَّحِجْرًا	مَّحْجُوْرًا ﴿53﴾
नमकीन है	कड़वा	और उसने बना दिया	उन दोनों के दर्मियान	एक पर्दा	और एक आड़	मज़बूत

وَهُوَ	الَّذِيْ	خَلَقَ	مِنَ الْمَآءِ	بَشَرًا	فَجَعَلَهٗ	نَسَبًا	وَّصِهْرًا ؕ
और वो ही है	जिसने	पैदा किया	पानी से	एक इंसान को	फिर उसने बना दिया उसे	नसब	और सुसराल (वाला)

وَكَانَ	رَبُّكَ	قَدِيْرًا ﴿54﴾	وَيَعْبُدُوْنَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	مَا
और है	रब आपका	बहुत क़ुदरत वाला	और वो इबादत करते हैं	सिवाए	अल्लाह के	उनकी जो

لَا يَنْفَعُهُمْ	وَلَا	يَضُرُّهُمْ ؕ	وَكَانَ	الْكَافِرُ	عَلٰى رَبِّهٖ	ظَهِيْرًا ﴿55﴾
ना वो नफ़ा दे सकते हैं उन्हें	और ना	वो नुक़्सान दे सकते हैं उन्हें	और है	काफ़िर	ख़िलाफ़ अपने रब के	मददगार

وَمَآ	اَرْسَلْنٰكَ	اِلَّا	مُبَشِّرًا	وَّنَذِيْرًا ﴿56﴾	قُلْ	مَآ	اَسْـَٔلُكُمْ
और नहीं	भेजा हमने आपको	मगर	ख़ुशख़बरी देने वाला	और डराने वाला (बना कर)	कह दीजिए	नहीं	मैं मांगता तुम से

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَيْهِ	مِنْ اَجْرٍ	اِلَّا	مَنْ	شَآءَ	اَنْ	يَّتَّخِذَ	اِلٰى رَبِّهٖ
उस पर	कोई अज्र	मगर	जो	चाहे	कि	वो बना ले	तरफ़ अपने रब के

سَبِيْلًا ﴿57﴾	وَتَوَكَّلْ	عَلَى الْحَيِّ	الَّذِيْ	لَا يَمُوْتُ	وَسَبِّحْ	بِحَمْدِهٖ ؕ
कोई रास्ता	और तवक्कुल कीजिए	हमेशा ज़िंदा रहने वाले पर	वो जो	नहीं मरेगा	और तस्बीह बयान कीजिए	साथ उसकी हम्द के

ع 8

وَكَفٰى	بِهٖ	بِذُنُوْبِ	عِبَادِهٖ	خَبِيْرًا ﴿58﴾ ۚۛ	الَّذِيْ	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ
और काफ़ी है	उसका	गुनाहों से	अपने बंदों के	ख़ूब बाख़बर होना	वो जिसने	पैदा किए	आसमान

وَالْاَرْضَ	وَمَا	بَيْنَهُمَا	فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ	ثُمَّ	اسْتَوٰى
और ज़मीन	और जो	दर्मियान है इन दोनों के	छः दिनों में	फिर	वो बुलंद हुआ

عَلَى الْعَرْشِ ۚ	اَلرَّحْمٰنُ	فَسْـَٔلْ	بِهٖ	خَبِيْرًا ﴿59﴾	وَاِذَا	قِيْلَ
अर्श पर	जो रहमान है	पस पूछिए	उसके बारे में	किसी ख़ूब ख़बर रखने वाले से	और जब	कहा जाता है

لَهُمُ	اسْجُدُوْا	لِلرَّحْمٰنِ	قَالُوْا	وَمَا	الرَّحْمٰنُ ۗ	اَنَسْجُدُ	لِمَا
उन्हें	सज्दा करो	रहमान को	वो कहते हैं	और क्या है	रहमान	क्या हम सज्दा करें	उसे जो

ع 5 16 3 السجدة 7

تَاْمُرُنَا	وَزَادَهُمْ	نُفُوْرًا ﴿60﴾ ع السجدة	تَبٰرَكَ	الَّذِيْ	جَعَلَ	فِي السَّمَآءِ
तुम हुक्म देते हो हमें	और उसने ज़्यादा कर दिया उन्हें	नफ़रत में	बहुत बाबरकत है	वो जिसने	बनाया	आसमान में

بُرُوْجًا	وَّجَعَلَ	فِيْهَا	سِرٰجًا	وَّقَمَرًا	مُّنِيْرًا ﴿61﴾	وَهُوَ	الَّذِيْ
बुर्जों को	और बनाया	उसमें	चिराग़/सूरज	और चांद को	रोशन	और वो ही है	जिसने

جَعَلَ	الَّيْلَ	وَالنَّهَارَ	خِلْفَةً	لِّمَنْ	اَرَادَ	اَنْ
बनाया	रात को	और दिन को	एक दूसरे के पीछे आने वाला	उसके लिए जो	इरादा करे	कि

يَّذَّكَّرَ	اَوْ	اَرَادَ	شُكُوْرًا ﴿62﴾	وَعِبَادُ	الرَّحْمٰنِ	الَّذِيْنَ	يَمْشُوْنَ
वो नसीहत पकड़े	या	वो इरादा करे	शुक्र गुज़ारी का	और बंदे	रहमान के	वो हैं जो	चलते हैं

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَى الْاَرْضِ	هَوْنًا	وَّاِذَا	خَاطَبَهُمُ	الْجٰهِلُوْنَ	قَالُوْا	سَلٰمًا ﴿63﴾
ज़मीन पर	आहिस्तगी से	और जब	मुख़ातिब होते हैं उनसे	जाहिल लोग	वो कहते हैं	सलाम

وَالَّذِيْنَ	يَبِيْتُوْنَ	لِرَبِّهِمْ	سُجَّدًا	وَّقِيَامًا ﴿64﴾	وَالَّذِيْنَ	يَقُوْلُوْنَ
और वो जो	रात गुज़ारते हैं	अपने रब के लिए	सज्दा करते हुए	और क़याम करते हुए	और वो जो	कहते हैं

رَبَّنَا	اصْرِفْ	عَنَّا	عَذَابَ	جَهَنَّمَ ۖ	اِنَّ	عَذَابَهَا	كَانَ
ऐ हमारे रब	फेर दे	हमसे	अज़ाब	जहन्नम का	बेशक	अज़ाब उसका	है

غَرَامًا ۖ ﴿65﴾	اِنَّهَا	سَآءَتْ	مُسْتَقَرًّا	وَّمُقَامًا ﴿66﴾	وَالَّذِيْنَ	اِذَآ
लाज़िम होने वाला	बेशक वो	बहुत बुरा है	ठिकाना	और क़याम गाह	और वो लोग	जब

اَنْفَقُوْا	لَمْ	يُسْرِفُوْا	وَلَمْ	يَقْتُرُوْا	وَكَانَ	بَيْنَ ذٰلِكَ	قَوَامًا ﴿67﴾
वो ख़र्च करते हैं	ना	वो इसराफ़ करते हैं	और ना	वो बुख़्ल करते हैं	और होता है	दर्मियान उनके	मोअतदल (तरीक़ा)

وَالَّذِيْنَ	لَا يَدْعُوْنَ	مَعَ	اللّٰهِ	اِلٰهًا	اٰخَرَ	وَلَا	يَقْتُلُوْنَ
और वो जो	नहीं वो पुकारते	साथ	अल्लाह के	इलाह	दूसरा	और नहीं	वो क़त्ल करते

النَّفْسَ	الَّتِيْ	حَرَّمَ	اللّٰهُ	اِلَّا	بِالْحَقِّ	وَلَا	يَزْنُوْنَ ۚ	وَمَنْ
किसी जान को	वो जो	हराम की	अल्लाह ने	मगर	साथ हक़ के	और नहीं	वो ज़िना करते	और जो कोई

يَّفْعَلْ	ذٰلِكَ	يَلْقَ	اَثَامًا ۙ ﴿68﴾	يُّضٰعَفْ	لَهُ	الْعَذَابُ	يَوْمَ
करेगा	ऐसा	वो पाएगा	गुनाह (की सज़ा) को	दोगुना किया जाएगा	उसके लिए	अज़ाब	दिन

الْقِيٰمَةِ	وَيَخْلُدْ	فِيْهٖ	مُهَانًا ۖ ﴿69﴾	اِلَّا	مَنْ	تَابَ	وَاٰمَنَ
क़यामत के	और वो हमेशा रहेगा	उसमें	ज़लील होकर	मगर	जिसने	तौबा की	और वो ईमान लाया

وَعَمِلَ	عَمَلًا	صَالِحًا	فَاُولٰٓئِكَ	يُبَدِّلُ	اللّٰهُ	سَيِّاٰتِهِمْ	حَسَنٰتٍ ؕ
और उसने अमल किए	अमल	नेक	तो यही लोग हैं	बदल देगा	अल्लाह	उनकी बुराइयों को	भलाइयों से

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

صَالِحًا	وَعَمِلَ	تَابَ	وَمَنْ	رَّحِيْمًا ⑦⓪	غَفُوْرًا	اللّٰهُ	وَكَانَ
नेक	और वो अमल करे	तौबा करे	और जो कोई	बहुत रहम करने वाला	बहुत बख़्शने वाला	अल्लाह	और है

الزُّوْرَ ۙ	لَا يَشْهَدُوْنَ	وَالَّذِيْنَ	مَتَابًا ⑦①	اِلَى اللّٰهِ	يَتُوْبُ	فَاِنَّهٗ
झूठ के	नहीं वो गवाह बनते	और वो जो	पलटना	तरफ़ अल्लाह के	वो पलट आता है	तो बेशक वो

ذُكِّرُوْا	اِذَا	وَالَّذِيْنَ	كِرَامًا ⑦②	مَرُّوْا	بِاللَّغْوِ	مَرُّوْا	وَاِذَا
वो नसीहत किए जाते हैं	जब	और वो लोग जो	इज़्ज़त से	वो गुज़र जाते हैं	लग़्व पर	वो गुज़रते हैं	और जब

وَالَّذِيْنَ	وَّعُمْيَانًا ⑦③	صُمًّا	عَلَيْهَا	يَخِرُّوْا	لَمْ	رَبِّهِمْ	بِاٰيٰتِ
और वो जो	और अंधे बन कर	बहरे	उन पर	वो गिर पड़ते	नहीं	अपने रब की	साथ आयात के

اَعْيُنٍ	قُرَّةَ	وَذُرِّيّٰتِنَا	مِنْ اَزْوَاجِنَا	لَنَا	هَبْ	رَبَّنَا	يَقُوْلُوْنَ
आंखों की	ठन्डक	और हमारी औलाद से	हमारी बीवियों से	हमें	अता कर	ऐ हमारे रब	कहते हैं

بِمَا	الْغُرْفَةَ	يُجْزَوْنَ	اُولٰٓئِكَ	اِمَامًا ⑦④	لِلْمُتَّقِيْنَ	وَّاجْعَلْنَا
बवजह उसके जो	बालाख़ाना	जो बदला में दिए जाऐंगे	यही लोग हैं	इमाम/रहनुमा	मुत्तक़ी लोगों का	और बना हमें

فِيْهَا ۭ	خٰلِدِيْنَ	وَّسَلٰمًا ۙ ⑦⑤	تَحِيَّةً	فِيْهَا	وَيُلَقَّوْنَ	صَبَرُوْا
उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	और सलाम से	दुआए ख़ैर	उसमें	और वो इस्तक़बाल किए जाऐंगे	उन्होंने सब्र किया

رَبِّيْ	بِكُمْ	يَعْبَؤُا	مَا	قُلْ	وَّمُقَامًا ⑦⑥	مُسْتَقَرًّا	حَسُنَتْ
रब मेरा	तुम्हारी	परवाह करता	ना	कह दीजिए	और क़यामगाह	ठिकाना	कितना अच्छा है

ع 6 17 4

لِزَامًا ع ⑦⑦	يَكُوْنُ	فَسَوْفَ	كَذَّبْتُمْ	فَقَدْ	دُعَآؤُكُمْ ج	لَوْلَا
चिमट जाने वाला (अज़ाब)	होगा	तो अनक़रीब	झुठलाया तुमने	तो तहक़ीक़	दुआ तुम्हारी	अगर ना होती

رُكُوْعَاتُهَا : 11 — 26 سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ مَكِّيَّةٌ 47 — اٰيَاتُهَا : 227

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

منزل 5

طٰسٓمّٓ ①	تِلْكَ	اٰيٰتُ	الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ②	لَعَلَّكَ	بَاخِعٌ
طٰسٓمّٓ	ये	आयात हैं	वाज़ेह किताब की	शायद कि आप	हलाक करने वाले हैं

نَّفْسَكَ	اَلَّا	يَكُوْنُوْا	مُؤْمِنِيْنَ ③	اِنْ	نَّشَاْ	نُنَزِّلْ	عَلَيْهِمْ
अपनी जान को	कि नहीं	हैं वो	ईमान लाने वाले	अगर	हम चाहें	हम उतार दें	उन पर

مِّنَ السَّمَآءِ	اٰيَةً	فَظَلَّتْ	اَعْنَاقُهُمْ	لَهَا	خٰضِعِيْنَ ④	وَمَا
आसमान से	कोई निशानी	तो हो जाऐं	गर्दनें उनकी	उसके लिए	झुकने वाली	और नहीं

يَاْتِيْهِمْ	مِّنْ ذِكْرٍ	مِّنَ الرَّحْمٰنِ	مُحْدَثٍ	اِلَّا	كَانُوْا	عَنْهُ
आती उनके पास	कोई नसीहत	रहमान की तरफ़ से	नई	मगर	वो होते हैं	उससे

مُعْرِضِيْنَ ⑤	فَقَدْ	كَذَّبُوْا	فَسَيَاْتِيْهِمْ	اَنْۢبٰٓؤُا	مَا	كَانُوْا
ऐराज़ करने वाले	पस तहक़ीक़	उन्होंने झुठलाया	तो अनक़रीब आऐंगी उनके पास	ख़बरें	उसकी जो	थे वो

بِهٖ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑥	اَوَلَمْ	يَرَوْا	اِلَى الْاَرْضِ	كَمْ	اَنْۢبَتْنَا
उसका	वो मज़ाक़ उड़ाते	क्या भला नहीं	उन्होंने देखा	तरफ़ ज़मीन के	कितने ही	उगाए हमने

فِيْهَا	مِنْ كُلِّ	زَوْجٍ	كَرِيْمٍ ⑦	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً ؕ	وَمَا
उसमें	हर क़िस्म के	जोड़े	उमदा	बेशक	उसमें	अलबत्ता एक निशानी है	और नहीं

كَانَ	اَكْثَرُهُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ⑧	وَاِنَّ	رَبَّكَ	لَهُوَ	الْعَزِيْزُ
हैं	अक्सर उनके	ईमान लाने वाले	और बेशक	रब आपका	अलबत्ता वो	बहुत ज़बरदस्त है

ع 1 9 5

الرَّحِيْمُ ⑨ ع	وَاِذْ	نَادٰى	رَبُّكَ	مُوْسٰٓى	اَنِ	ائْتِ	الْقَوْمَ
निहायत रहम करने वाला है	और जब	पुकारा	आपके रब ने	मूसा को	कि	आओ	उन लोगों की तरफ़

الظّٰلِمِيْنَ ⑩ لا	قَوْمَ	فِرْعَوْنَ ؕ	اَلَا	يَتَّقُوْنَ ⑪	قَالَ	رَبِّ	اِنِّيْٓ
जो ज़ालिम हैं	क़ौमे	फ़िरऔन के	क्या नहीं	वो डरते	कहा	ऐ मेरे रब	बेशक मैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَخَافُ	اَنْ	يُّكَذِّبُوْنِ ﴿12﴾	وَيَضِيْقُ	صَدْرِيْ	وَلَا	يَنْطَلِقُ	لِسَانِيْ
मैं डरता हूं	कि	वो झुठला देंगे मुझे	और घुटता है	सीना मेरा	और नहीं	चलती	ज़बान मेरी

فَاَرْسِلْ	اِلٰى هٰرُوْنَ ﴿13﴾	وَلَهُمْ	عَلَيَّ	ذَنْۢبٌ	فَاَخَافُ	اَنْ
तो भेज (नबुव्वत)	तरफ़ हारून के	और उनके लिए है	मुझ पर	एक गुनाह	तो मैं डरता हूं	कि

يَّقْتُلُوْنِ ﴿14﴾ ج	قَالَ	كَلَّا ج	فَاذْهَبَا	بِاٰيٰتِنَآ	اِنَّا	مَعَكُمْ
वो क़त्ल कर देंगे मुझे	फ़रमाया	हरगिज़ नहीं	पस तुम दोनों जाओ	साथ हमारी निशानियों के	बेशक हम	तुम्हारे साथ

مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿15﴾	فَاْتِيَا	فِرْعَوْنَ	فَقُوْلَآ	اِنَّا	رَسُوْلُ	رَبِّ
ख़ूब सुनने वाले हैं	फिर दोनों जाओ	फ़िरऔन के पास	तो दोनों कहो	बेशक हम	रसूल हैं	रब्बुल

الْعٰلَمِيْنَ ﴿16﴾ لا	اَنْ	اَرْسِلْ	مَعَنَا	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿17﴾ ط	قَالَ	اَلَمْ
आलमीन के	ये कि	भेज दो	हमारे साथ	बनी इस्राईल को	उसने कहा	क्या नहीं

نُرَبِّكَ	فِيْنَا	وَلِيْدًا	وَّلَبِثْتَ	فِيْنَا	مِنْ عُمُرِكَ	سِنِيْنَ ﴿18﴾ لا
हमने पाला तुझे	अपने दर्मियान	बच्चा सा	और ठहरा तू	हमारे दर्मियान	अपनी उम्र में से	कई साल

وَفَعَلْتَ	فَعْلَتَكَ	الَّتِيْ	فَعَلْتَ	وَاَنْتَ	مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿19﴾	قَالَ
और किया तू ने	काम अपना	वो जो	किया तू ने	और तू	नाशुक्रों में से है	उसने कहा

فَعَلْتُهَآ	اِذًا	وَّاَنَا	مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿20﴾ ط	فَفَرَرْتُ	مِنْكُمْ	لَمَّا
किया मैंने उसे	तब	जब कि मैं	राह भूले हुए लोगों में से था	फिर भाग गया मैं	तुमसे	जब

خِفْتُكُمْ	فَوَهَبَ	لِيْ	رَبِّيْ	حُكْمًا	وَّجَعَلَنِيْ	مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿21﴾
डरा मैं तुमसे	तो अता किया	मुझे	मेरे रब ने	हुक्म	और उसने बनाया मुझे	रसूलों में से

وَتِلْكَ	نِعْمَةٌ	تَمُنُّهَا	عَلَيَّ	اَنْ	عَبَّدْتَّ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿22﴾ ط
और यही है	वो एहसान	तुम जतला रहे हो जिसे	मुझ पर	कि	ग़ुलाम बना रखा है तुमने	बनी इस्राईल को

INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION AL-HUDA

قَالَ	فِرْعَوْنُ	وَمَا	رَبُّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿23﴾	قَالَ	رَبُّ	السَّمٰوٰتِ
कहा	फ़िरऔन ने	और क्या है	रब्बुल	आलमीन	उसने कहा	रब है	आसमानों

وَالْاَرْضِ	وَمَا	بَيْنَهُمَا	اِنْ	كُنْتُمْ	مُّوْقِنِيْنَ ﴿24﴾	قَالَ
और ज़मीन का	और जो कुछ	दर्मियान है उन दोनों के	अगर	हो तुम	यक़ीन करने वाले	उसने कहा

لِمَنْ	حَوْلَهٗٓ	اَلَا	تَسْتَمِعُوْنَ ﴿25﴾	قَالَ	رَبُّكُمْ	وَرَبُّ
उनको जो	उसके इर्द-गिर्द थे	क्या नहीं	तुम ग़ौर से सुनते	उसने कहा	रब तुम्हारा	और रब

اٰبَآئِكُمُ	الْاَوَّلِيْنَ ﴿26﴾	قَالَ	اِنَّ	رَسُوْلَكُمُ	الَّذِيْٓ	اُرْسِلَ
तुम्हारे आबा ओ अजदाद का	जो पहले थे	उसने कहा	बेशक	रसूल तुम्हारा	वो जो	भेजा गया

اِلَيْكُمْ	لَمَجْنُوْنٌ ﴿27﴾	قَالَ	رَبُّ	الْمَشْرِقِ	وَالْمَغْرِبِ	وَمَا
तरफ़ तुम्हारे	अलबत्ता मजनून है	उसने कहा	रब	मशरिक़	और मग़रिब का	और जो

بَيْنَهُمَا	اِنْ	كُنْتُمْ	تَعْقِلُوْنَ ﴿28﴾	قَالَ	لَئِنِ	اتَّخَذْتَ
इन दोनों के दर्मियान है	अगर	हो तुम	तुम अक़्ल रखते	कहा	अलबत्ता अगर	बनाया तू ने

اِلٰهًا	غَيْرِيْ	لَاَجْعَلَنَّكَ	مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿29﴾	قَالَ	اَوَلَوْ	
कोई इलाह	मेरे सिवा	अलबत्ता मैं ज़रूर कर दूंगा तुझे	क़ैदियों में से	उसने कहा	क्या भला अगर	

جِئْتُكَ	بِشَيْءٍ	مُّبِيْنٍ ﴿30﴾	قَالَ	فَاْتِ	بِهٖٓ	اِنْ	كُنْتَ
लाऊं मैं तेरे पास	कोई चीज़ (दलील)	वाज़ेह	उसने कहा	तो ले आ	उसे	अगर	है तू

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿31﴾	فَاَلْقٰى	عَصَاهُ	فَاِذَا	هِيَ	ثُعْبَانٌ	مُّبِيْنٌ ﴿32﴾
सच्चों में से	फिर उसने डाला	असा अपना	तो अचानक	वो	अज़दहा था	सरीह

وَّنَزَعَ	يَدَهٗ	فَاِذَا	هِيَ	بَيْضَآءُ	لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿33﴾ ع	قَالَ
और उसने खींच लिया	हाथ अपना	तो अचानक	वो	सफ़ेद/चमकता हुआ था	देखने वालों के लिए	कहा

ع 2 24 6

لِلْمَلَاِ	حَوْلَهٗٓ	اِنَّ	هٰذَا	لَسٰحِرٌ	عَلِيْمٌ ﴿34﴾ لا	يُّرِيْدُ
सरदारों से	जो उसके इर्द-गिर्द थे	बेशक	ये	अलबत्ता एक जादूगर है	ख़ूब जानने वाला/माहिर	वो चाहता है

اَنْ	يُّخْرِجَكُمْ	مِّنْ اَرْضِكُمْ	بِسِحْرِهٖ ۖ	فَمَاذَا	تَاْمُرُوْنَ ﴿35﴾	قَالُوْٓا
कि	वो निकाल दे तुम्हें	तुम्हारी ज़मीन से	साथ अपने जादू के	तो क्या	तुम हुक्म देते हो	उन्होंने कहा

اَرْجِهْ	وَ اَخَاهُ	وَابْعَثْ	فِى الْمَدَآئِنِ	حٰشِرِيْنَ ﴿36﴾ لا	يَاْتُوْكَ
मोहलत दो उसे	और उसके भाई को	और भेज दो	शहरों में	इकट्ठे करने वाले	वो ले आऐंगे तेरे पास

بِكُلِّ	سَحَّارٍ	عَلِيْمٍ ﴿37﴾	فَجُمِعَ	السَّحَرَةُ	لِمِيْقَاتِ	يَوْمٍ
तमाम	बड़े जादूगर	ख़ूब जानने वाले	तो जमा किए गए	जादूगर	मुक़र्रर वक़्त के लिए	एक दिन

مَّعْلُوْمٍ ﴿38﴾ لا	وَّقِيْلَ	لِلنَّاسِ	هَلْ	اَنْتُمْ	مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿39﴾ لا	لَعَلَّنَا
मालूम के	और कहा गया	लोगों से	क्या	तुम	जमा होने वाले हो	ताकि हम

نَتَّبِعُ	السَّحَرَةَ	اِنْ	كَانُوْا	هُمُ	الْغٰلِبِيْنَ ﴿40﴾	فَلَمَّا	جَآءَ
हम पैरवी करें	जादूगरों की	अगर	हों वो	वो ही	ग़ालिब आने वाले	तो जब	आए

السَّحَرَةُ	قَالُوْا	لِفِرْعَوْنَ	اَئِنَّ	لَنَا	لَاَجْرًا	اِنْ	كُنَّا	نَحْنُ
जादूगर	उन्होंने कहा	फ़िरऔन से	क्या बेशक	हमारे लिए	वाक़ई कोई सिला है	अगर	हों हम	हम ही

الْغٰلِبِيْنَ ﴿41﴾	قَالَ	نَعَمْ	وَاِنَّكُمْ	اِذًا	لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿42﴾	قَالَ
ग़ालिब आने वाले	उसने कहा	हां	और बेशक तुम	तब	अलबत्ता मुक़र्रबीन में से होगे	कहा

لَهُمْ	مُّوْسٰٓى	اَلْقُوْا	مَآ	اَنْتُمْ	مُّلْقُوْنَ ﴿43﴾	فَاَلْقَوْا	حِبَالَهُمْ
उनसे	मूसा ने	डालो	जो	तुम	डालने वाले हो	तो उन्होंने डालीं	रस्सियां अपनी

وَعِصِيَّهُمْ	وَقَالُوْا	بِعِزَّةِ	فِرْعَوْنَ	اِنَّا	لَنَحْنُ	الْغٰلِبُوْنَ ﴿44﴾
और लाठियां अपनी	और उन्होंने कहा	क़सम है इज़्ज़ते	फ़िरऔन की	बेशक हम	अलबत्ता हम ही	ग़ालिब आने वाले हैं

فَاَلْقٰى	مُوْسٰى	عَصَاهُ	فَاِذَا	هِىَ	تَلْقَفُ	مَا	يَاْفِكُوْنَ ﴿45﴾ ۚ
तो डाली	मूसा ने	लाठी अपनी	तो अचानक	वो	निगल रही थी	उसको जो	वो गढ़ रहे थे

فَاُلْقِىَ	السَّحَرَةُ	سٰجِدِيْنَ ﴿46﴾ ۙ	قَالُوْٓا	اٰمَنَّا	بِرَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿47﴾ ۙ
तो डाल दिए गए	जादूगर	सज्दा करते हुए	उन्होंने कहा	ईमान लाए हम	साथ रब	अल आलमीन के

رَبِّ	مُوْسٰى	وَهٰرُوْنَ ﴿48﴾	قَالَ	اٰمَنْتُمْ	لَهٗ	قَبْلَ	اَنْ
रब	मूसा	और हारून के	कहा	ईमान लाए तुम	उस पर	इससे पहले	कि

اٰذَنَ	لَكُمْ ۚ	اِنَّهٗ	لَكَبِيْرُكُمُ	الَّذِىْ	عَلَّمَكُمُ	السِّحْرَ ۚ
मैं इजाज़त देता	तुम्हें	बेशक वो	अलबत्ता बड़ा है तुम्हारा	जिसने	सिखाया तुम्हें	जादू

فَلَسَوْفَ	تَعْلَمُوْنَ ۘ	لَاُقَطِّعَنَّ	اَيْدِيَكُمْ	وَاَرْجُلَكُمْ	مِّنْ خِلَافٍ
पस अलबत्ता ज़रूर	तुम जान लोगे	अलबत्ता मैं ज़रूर काट दूंगा	तुम्हारे हाथों को	और तुम्हारे पांवों को	मुख़ालिफ़ सिम्त से

وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ	اَجْمَعِيْنَ ﴿49﴾ ۚ	قَالُوْا	لَا ضَيْرَ ۖ	اِنَّآ	اِلٰى رَبِّنَا
और अलबत्ता मैं ज़रूर सूली पर चढ़ाऊंगा तुम्हें	सबके सबको	उन्होंने कहा	नहीं कोई नुक़्सान	बेशक हम	तरफ़ अपने रब के

مُنْقَلِبُوْنَ ﴿50﴾ ۚ	اِنَّا	نَطْمَعُ	اَنْ	يَّغْفِرَ	لَنَا	رَبُّنَا	خَطٰيٰنَآ
पलटने वाले हैं	बेशक हम	हम उम्मीद रखते हैं	कि	बख़्श देगा	हमारे लिए	हमारा रब	ख़ताऐं हमारी

ع 3 18 7

اَنْ	كُنَّآ	اَوَّلَ	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿51﴾ ۘ	وَاَوْحَيْنَآ	اِلٰى مُوْسٰٓى	اَنْ
कि	हैं हम	सबसे पहले	ईमान लाने वाले	और वही की हमने	तरफ़ मूसा के	ये कि

اَسْرِ	بِعِبَادِىْٓ	اِنَّكُمْ	مُّتَّبَعُوْنَ ﴿52﴾	فَاَرْسَلَ	فِرْعَوْنُ	فِى الْمَدَآئِنِ
रात को ले चल	मेरे बंदों को	बेशक तुम	पीछा किए जाने वाले हो	तो भेजा	फ़िरऔन ने	शहरों में

حٰشِرِيْنَ ﴿53﴾ ۚ	اِنَّ	هٰٓؤُلَآءِ	لَشِرْذِمَةٌ	قَلِيْلُوْنَ ﴿54﴾ ۙ	وَاِنَّهُمْ	لَنَا
इकट्ठा करने वालों को	बेशक	ये लोग	अलबत्ता एक जमाअत हैं	कम	और बेशक वो	हमें

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَغَآئِظُوْنَ ﴿55﴾ لا	وَ اِنَّا	لَجَمِيْعٌ	حٰذِرُوْنَ ﴿56﴾ ط	فَاَخْرَجْنٰهُمْ	مِّنْ جَنّٰتٍ
अलबत्ता ग़ुस्सा दिलाने वाले हैं	और बेशक हम	अलबत्ता सब	मोहतात/होशियार हैं	तो निकाल दिया हमने उन्हें	बाग़ात से
وَّ عُيُوْنٍ ﴿57﴾ لا	وَّ كُنُوْزٍ	وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿58﴾ لا	كَذٰلِكَ ط	وَ اَوْرَثْنٰهَا	
और चश्मों	और ख़जानों	और उम्दा/नफ़ीस ठिकाने से	इसी तरह	और वारिस बना दिया हमने उनका	
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿59﴾ ط	فَاَتْبَعُوْهُمْ	مُّشْرِقِيْنَ ﴿60﴾	فَلَمَّا	تَرَآءَ	
बनी इस्राईल को	तो उन्होंने पीछा किया उनका	सूरज तुलू होते वक़्त	फिर जब	आमने-सामने हुईं	
الْجَمْعٰنِ	قَالَ	اَصْحٰبُ	مُوْسٰٓى	اِنَّا	لَمُدْرَكُوْنَ ﴿61﴾ ج	قَالَ	كَلَّا ج
दो जमाअतें	कहने लगे	साथी	मूसा के	बेशक हम	अलबत्ता पा लिए जाने वाले हैं	उसने कहा	हरगिज़ नहीं
اِنَّ	مَعِيَ	رَبِّيْ	سَيَهْدِيْنِ ﴿62﴾	فَاَوْحَيْنَآ	اِلٰى مُوْسٰٓى	اَنِ
बेशक	मेरे साथ	मेरा रब है	वो ज़रूर रहनुमाई करेगा मेरी	तो वही की हमने	तरफ़ मूसा के	कि
اضْرِبْ	بِّعَصَاكَ	الْبَحْرَ ط	فَانْفَلَقَ	فَكَانَ	كُلُّ	فِرْقٍ	كَالطَّوْدِ
मारो	अपने असा को	समुन्दर पर	तो वो फट गया	फिर हो गया	हर	हिस्सा	जैसे पहाड़
الْعَظِيْمِ ﴿63﴾ ج	وَ اَزْلَفْنَا	ثَمَّ	الْاٰخَرِيْنَ ﴿64﴾ ج	وَ اَنْجَيْنَا	مُوْسٰى	وَمَنْ
बहुत बड़ा	और क़रीब कर दिया हमने	उस जगह	दूसरों को	और निजात दी हमने	मूसा को	और जो
مَّعَهٗٓ	اَجْمَعِيْنَ ﴿65﴾ ج	ثُمَّ	اَغْرَقْنَا	الْاٰخَرِيْنَ ﴿66﴾ ط	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ
उसके साथ थे	सबके सबको	फिर	ग़र्क़ कर दिया हमने	दूसरों को	बेशक	इसमें
لَاٰيَةً ط	وَمَا	كَانَ	اَكْثَرُهُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿67﴾	وَ اِنَّ	رَبَّكَ	لَهُوَ
अलबत्ता एक निशानी है	और ना	थे	अक्सर उनके	ईमान लाने वाले	और बेशक	रब आपका	अलबत्ता वो ही है
الْعَزِيْزُ	الرَّحِيْمُ ﴿68﴾ ع	وَاتْلُ	عَلَيْهِمْ	نَبَاَ	اِبْرٰهِيْمَ ﴿69﴾	اِذْ	قَالَ
बहुत ज़बरदस्त	निहायत रहम करने वाला	और पढ़ सुनाइए	इन्हें	ख़बर	इब्राहीम की	जब	उसने कहा

ع 4 17 8 وقف لازم

لِاَبِيْهِ	وَقَوْمِهٖ	مَا	تَعْبُدُوْنَ ﴿70﴾	قَالُوْا	نَعْبُدُ	اَصْنَامًا
अपने बाप से	और अपनी क़ौम से	किस की	तुम इबादत करते हो	उन्होंने कहा	हम इबादत करते हैं	बुतों की

فَنَظَلُّ	لَهَا	عٰكِفِيْنَ ﴿71﴾	قَالَ	هَلْ	يَسْمَعُوْنَكُمْ	اِذْ
तो हम हमेशा रहेंगे	उनके लिए	जम कर बैठने वाले	उसने कहा	क्या	वो सुनते हैं तुम्हें	जब

تَدْعُوْنَ ﴿72﴾	اَوْ	يَنْفَعُوْنَكُمْ	اَوْ	يَضُرُّوْنَ ﴿73﴾	قَالُوْا	بَلْ	وَجَدْنَآ
तुम पुकारते हो	या	वो नफ़ा देते हैं तुम्हें	या	वो नुक़्सान देते हैं	उन्होंने कहा	बल्कि	पाया हमने

اٰبَآءَنَا	كَذٰلِكَ	يَفْعَلُوْنَ ﴿74﴾	قَالَ	اَفَرَءَيْتُمْ	مَّا	كُنْتُمْ
अपने आबा ओ अजदाद को	इसी तरह	वो करते थे	कहा	क्या फिर देखा तुमने	जिनकी	हो तुम

تَعْبُدُوْنَ ﴿75﴾	اَنْتُمْ	وَاٰبَآؤُكُمُ	الْاَقْدَمُوْنَ ﴿76﴾	فَاِنَّهُمْ	عَدُوٌّ	لِّيْٓ
तुम इबादत करते	तुम	और तुम्हारे आबा ओ अजदाद	पहले	तो बेशक वो	दुश्मन हैं	मेरे

اِلَّا	رَبَّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿77﴾	الَّذِيْ	خَلَقَنِيْ	فَهُوَ	يَهْدِيْنِ ﴿78﴾	وَالَّذِيْ
सिवाए	रब	अल आलमीन के	वो जिसने	पैदा किया मुझे	पस वो	हिदायत देता है मुझे	और वो जो

هُوَ	يُطْعِمُنِيْ	وَيَسْقِيْنِ ﴿79﴾	وَاِذَا	مَرِضْتُ	فَهُوَ	يَشْفِيْنِ ﴿80﴾	
वो ही	वो खिलाता है मुझे	और वो पिलाता है मुझे	और जब	बीमार होता हूं मैं	तो वो ही	वो शिफ़ा देता है मुझे	

وَالَّذِيْ	يُمِيْتُنِيْ	ثُمَّ	يُحْيِيْنِ ﴿81﴾	وَالَّذِيْٓ	اَطْمَعُ	اَنْ
और वो जो	मौत देगा मुझे	फिर	वो ज़िंदा करेगा मुझे	और वो जिस से	मैं उम्मीद रखता हूं	कि

يَّغْفِرَ	لِيْ	خَطِيْٓـَٔتِيْ	يَوْمَ	الدِّيْنِ ﴿82﴾	رَبِّ	هَبْ	لِيْ
वो बख़्श देगा	मेरे लिए	ख़ता मेरी	दिन	बदले के	ऐ मेरे रब	अता कर	मुझे

حُكْمًا	وَّاَلْحِقْنِيْ	بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿83﴾	وَاجْعَلْ	لِّيْ	لِسَانَ	صِدْقٍ
हुक्म/हिक्मत	और मिला दे मुझे	साथ नेक लोगों के	और बना दे	मेरे लिए	ज़बान/नामवरी	सच्चाई की

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿84﴾ ۙ	وَاجْعَلْنِيْ	مِنْ وَّرَثَةِ	جَنَّةِ	النَّعِيْمِ ﴿85﴾ ۙ	وَاغْفِرْ
बाद वालों में	और बना दे मुझे	वारिसों में से	जन्नत के	नेअमत भरी	और बख़्श दे

لِاَبِيْٓ	اِنَّهٗ	كَانَ	مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿86﴾ ۙ	وَلَا	تُخْزِنِيْ	يَوْمَ
मेरे बाप को	बेशक वो	है वो	गुमराहों में से	और ना	तू रुस्वा कर मुझे	जिस दिन

يُبْعَثُوْنَ ﴿87﴾ ۙ	يَوْمَ	لَا يَنْفَعُ	مَالٌ	وَّلَا	بَنُوْنَ ﴿88﴾ ۙ	اِلَّا	مَنْ
वो उठाए जाऐंगे	जिस दिन	ना फ़ायदा देगा	माल	और ना	बेटे	मगर	जो

اَتَى	اللّٰهَ	بِقَلْبٍ	سَلِيْمٍ ﴿89﴾ ؕ	وَاُزْلِفَتِ	الْجَنَّةُ	لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿90﴾ ۙ
आए	अल्लाह के पास	साथ दिल	सलामत के	और क़रीब लाई जाएगी	जन्नत	मुत्तक़ी लोगों के लिए

وَبُرِّزَتِ	الْجَحِيْمُ	لِلْغٰوِيْنَ ﴿91﴾ ۙ	وَقِيْلَ	لَهُمْ	اَيْنَمَا	كُنْتُمْ
और ज़ाहिर कर दी जाएगी	जहन्नम	गुमराहों के लिए	और कहा जाएगा	उन्हें	कहां हैं जिनकी	थे तुम

تَعْبُدُوْنَ ﴿92﴾ ۙ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ ؕ	هَلْ	يَنْصُرُوْنَكُمْ	اَوْ	يَنْتَصِرُوْنَ ﴿93﴾ ؕ
तुम इबादत करते	सिवाए	अल्लाह के	क्या	वो मदद कर सकते हैं तुम्हारी	या	वो बदला ले सकते हैं

فَكُبْكِبُوْا	فِيْهَا	هُمْ	وَالْغَاوٗنَ ﴿94﴾ ۙ	وَجُنُوْدُ	اِبْلِيْسَ
तो वो औंधे मुंह गिराए जाऐंगे	उसमें	वो	और बहके हुए लोग	और लश्कर	इब्लीस के

اَجْمَعُوْنَ ﴿95﴾ ؕ	قَالُوْا	وَهُمْ	فِيْهَا	يَخْتَصِمُوْنَ ﴿96﴾ ۙ	تَاللّٰهِ	اِنْ
सबके सब	वो कहेंगे	जब कि वो	उसमें	वो झगड़ रहे होंगे	क़सम अल्लाह की	बेशक

كُنَّا	لَفِيْ ضَلٰلٍ	مُّبِيْنٍ ﴿97﴾ ۙ	اِذْ	نُسَوِّيْكُمْ	بِرَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿98﴾
थे हम	अलबत्ता गुमराही में	खुली-खुली	जब	हम बराबर ठहरा रहे थे तुम्हें	साथ रब	अल आलमीन के

وَمَآ	اَضَلَّنَآ	اِلَّا	الْمُجْرِمُوْنَ ﴿99﴾	فَمَا	لَنَا	مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿100﴾ ۙ
और नहीं	गुमराह किया हमें	मगर	मुजरिमों ने	तो नहीं	हमारे लिए	कोई सिफ़ारिशियों में से

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَا	صَدِيْقٍ	حَمِيْمٍ ﴿101﴾	فَلَوْ	اَنَّ	لَنَا	كَرَّةً	فَنَكُوْنَ
और ना	कोई दोस्त	गहरा	पस काश	ये कि (होता)	हमारे लिए	एक बार पलटना	तो हम होते

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿102﴾	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً ؕ	وَمَا	كَانَ	اَكْثَرُهُمْ
ईमान लाने वालों में से	यक़ीनन	उसमें	अलबत्ता एक निशानी है	और ना	थे	अक्सर उनके

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿103﴾	وَاِنَّ	رَبَّكَ	لَهُوَ	الْعَزِيْزُ	الرَّحِيْمُ ﴿104﴾ ع	كَذَّبَتْ
ईमान लाने वाले	और बेशक	रब आपका	अलबत्ता वो	बहुत ज़बरदस्त है	निहायत रहम करने वाला है	झुठलाया

ع 5 36 9

قَوْمُ	نُوْحٍ	الْمُرْسَلِيْنَ ﴿105﴾ ۚ	اِذْ	قَالَ	لَهُمْ	اَخُوْهُمْ	نُوْحٌ
क़ौमे	नूह ने	रसूलों को	जब	कहा	उन्हें	उनके भाई	नूह ने

اَلَا	تَتَّقُوْنَ ﴿106﴾ ۚ	اِنِّيْ	لَكُمْ	رَسُوْلٌ	اَمِيْنٌ ﴿107﴾ ۙ	فَاتَّقُوا	اللّٰهَ
क्या नहीं	तुम डरते	बेशक मैं	तुम्हारे लिए	रसूल हूं	अमानत दार	पस डरो	अल्लाह से

وَاَطِيْعُوْنِ ﴿108﴾ ۚ	وَمَآ	اَسْـَٔلُكُمْ	عَلَيْهِ	مِنْ اَجْرٍ ۚ	اِنْ	اَجْرِيَ	اِلَّا
और इताअत करो मेरी	और नहीं	मैं सवाल करता तुमसे	उस पर	किसी अज्र का	नहीं	अज्र मेरा	मगर

عَلٰى	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿109﴾ ۚ	فَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَاَطِيْعُوْنِ ﴿110﴾ ؕ	قَالُوْٓا
ऊपर	रब	अल आलमीन के	पस डरो	अल्लाह से	और इताअत करो मेरी	उन्होंने कहा

اَنُؤْمِنُ	لَكَ	وَاتَّبَعَكَ	الْاَرْذَلُوْنَ ﴿111﴾ ؕ	قَالَ	وَمَا	عِلْمِيْ
क्या हम ईमान लाऐं	तुझ पर	जबकि पैरवी की है तेरी	रज़ील/हक़ीर लोगों ने	उसने कहा	और क्या है	इल्म मेरा

بِمَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿112﴾ ۚ	اِنْ	حِسَابُهُمْ	اِلَّا	عَلٰى رَبِّيْ
उसके बारे में जो	थे वो	वो अमल करते रहते	नहीं	हिसाब उनका	मगर	मेरे रब के ज़िम्मे

لَوْ	تَشْعُرُوْنَ ﴿113﴾ ۚ	وَمَآ	اَنَا	بِطَارِدِ	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿114﴾ ۚ	اِنْ	اَنَا
काश	तुम शऊर रखते	और नहीं हूं	मैं	धुतकारने वाला	ईमान वालों को	नहीं हूं	मैं

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلَّا	نَذِيْرٌ	مُّبِيْنٌ ﴿115﴾ ط	قَالُوْا	لَئِنْ	لَّمْ	تَنْتَهِ	يٰنُوْحُ
मगर	डराने वाला	खुल्लम-खुल्ला	उन्होंने कहा	अलबत्ता अगर	ना	तू बाज़ आया	ऐ नूह

النصف

لَتَكُوْنَنَّ	مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ﴿116﴾ ط	قَالَ	رَبِّ	اِنَّ	قَوْمِيْ	كَذَّبُوْنِ ﴿117﴾ ج	
अलबत्ता तू ज़रूर होगा	संगसार किए जाने वालों में से	कहा	ऐ मेरे रब	बेशक	मेरी क़ौम ने	झुठलाया है मुझे	

فَافْتَحْ	بَيْنِيْ	وَبَيْنَهُمْ	فَتْحًا	وَّنَجِّنِيْ	وَمَنْ	مَّعِيَ
पस फ़ैसला कर दे	दर्मियान मेरे	और दर्मियान उनके	(हतमी) फ़ैसला	और निजात दे मुझे	और उनको जो	मेरे साथ हैं

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿118﴾	فَاَنْجَيْنٰهُ	وَمَنْ	مَّعَهٗ	فِي الْفُلْكِ
ईमान लाने वालों में से	तो निजात दी हमने उसे	और उनको जो	उसके साथ थे	कश्ती में

الْمَشْحُوْنِ ﴿119﴾ ج	ثُمَّ	اَغْرَقْنَا	بَعْدُ	الْبٰقِيْنَ ﴿120﴾ ط	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ
जो भरी हुई थी	फिर	ग़र्क कर दिया हमने	उसके बाद	बाक़ी रहने वालों को	बेशक	इसमें

لَاٰيَةً ط	وَمَا	كَانَ	اَكْثَرُهُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿121﴾	وَاِنَّ	رَبَّكَ	لَهُوَ
अलबत्ता एक निशानी है	और ना	थे	अक्सर उनके	ईमान लाने वाले	और बेशक	रब आपका	अलबत्ता वो

ع 6 18 10

الْعَزِيْزُ	الرَّحِيْمُ ﴿122﴾ ع	كَذَّبَتْ	عَادُ	الْمُرْسَلِيْنَ ﴿123﴾ ج	اِذْ	قَالَ	
बहुत ज़बरदस्त है	निहायत रहम करने वाला है	झुठलाया	आद ने	रसूलों को	जब	कहा था	

لَهُمْ	اَخُوْهُمْ	هُوْدٌ	اَلَا	تَتَّقُوْنَ ﴿124﴾ ج	اِنِّيْ	لَكُمْ	رَسُوْلٌ
उनसे	उनके भाई	हूद ने	क्या नहीं	तुम डरते	बेशक मैं	तुम्हारे लिए	एक रसूल हूं

اَمِيْنٌ ﴿125﴾ لا	فَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَاَطِيْعُوْنِ ﴿126﴾ ج	وَمَآ	اَسْـَٔلُكُمْ	عَلَيْهِ
अमानतदार	पस डरो	अल्लाह से	और इताअत करो मेरी	और नहीं	मैं सवाल करता तुमसे	इस पर

مِنْ اَجْرٍ ج	اِنْ	اَجْرِيَ	اِلَّا	عَلٰى	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿127﴾ ط	اَتَبْنُوْنَ
किसी अज्र का	नहीं	अज्र मेरा	मगर	ऊपर	रब	अल आलमीन के	क्या तुम बनाते हो

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِكُلِّ	رِيْعٍ	اٰيَةً	تَعْبَثُوْنَ ﴿128﴾ لا	وَتَتَّخِذُوْنَ	مَصَانِعَ	لَعَلَّكُمْ
हर	ऊंची जगह पर	एक निशानी (यादगार)	अबस/बेकार काम करते हुए	और तुम बनाते हो	महल्लात	शायद कि तुम

تَخْلُدُوْنَ ﴿129﴾ ج	وَاِذَا	بَطَشْتُمْ	بَطَشْتُمْ	جَبَّارِيْنَ ﴿130﴾ ج	فَاتَّقُوا	اللّٰهَ
तुम हमेशा रहोगे	और जब	पकड़ते हो तुम	पकड़ते हो तुम	सरकश हो कर	पस डरो	अल्लाह से

وَاَطِيْعُوْنِ ﴿131﴾ ج	وَاتَّقُوا	الَّذِيْٓ	اَمَدَّكُمْ	بِمَا	تَعْلَمُوْنَ ﴿132﴾ ج	اَمَدَّكُمْ
और इताअत करो मेरी	और डरो	उससे जिसने	मदद की तुम्हारी	साथ उसके जो	तुम जानते हो	उसने मदद की तुम्हारी

بِاَنْعَامٍ	وَّبَنِيْنَ ﴿133﴾ لا	وَجَنّٰتٍ	وَّعُيُوْنٍ ﴿134﴾ ج	اِنِّيْٓ	اَخَافُ	عَلَيْكُمْ
साथ मवेशियों	और बेटों के	और बाग़ों	और चश्मों के	बेशक मैं	मैं डरता हूं	तुम पर

عَذَابَ	يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿135﴾ ط	قَالُوْا	سَوَآءٌ	عَلَيْنَآ	اَوَعَظْتَ	اَمْ
अज़ाब से	बड़े दिन के	उन्होंने कहा	बराबर है	हम पर	ख़्वाह नसीहत करे तू	या

لَمْ	تَكُنْ	مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿136﴾ لا	اِنْ	هٰذَآ	اِلَّا	خُلُقُ	الْاَوَّلِيْنَ ﴿137﴾ لا
ना	तू हो	नसीहत करने वालों में से	नहीं है	ये	मगर	आदत	पहलों की

وَمَا	نَحْنُ	بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿138﴾ ج	فَكَذَّبُوْهُ	فَاَهْلَكْنٰهُمْ ط	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ
और नहीं हैं	हम	अज़ाब दिए जाने वाले	तो उन्होंने झुठलाया उसे	फिर हलाक कर दिया हमने उन्हें	यक़ीनन	इसमें

لَاٰيَةً ط	وَمَا	كَانَ	اَكْثَرُهُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿139﴾	وَاِنَّ	رَبَّكَ	لَهُوَ
अलबत्ता एक निशानी है	और ना	थे	अक्सर उनके	ईमान लाने वाले	और बेशक	रब आपका	अलबत्ता वो

الْعَزِيْزُ	الرَّحِيْمُ ﴿140﴾ ع	كَذَّبَتْ	ثَمُوْدُ	الْمُرْسَلِيْنَ ﴿141﴾ ج	اِذْ	قَالَ	ع 7 18 11
बहुत ज़बरदस्त है	निहायत रहम करने वाला है	झुठलाया	समूद ने	रसूलों को	जब	कहा था	

لَهُمْ	اَخُوْهُمْ	صٰلِحٌ	اَلَا	تَتَّقُوْنَ ﴿142﴾ ج	اِنِّيْ	لَكُمْ	رَسُوْلٌ
उनसे	उनके भाई	सालेह ने	क्या नहीं	तुम डरते	बेशक मैं	तुम्हारे लिए	रसूल हूं

AS-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَمِيْنٌ ﴿143﴾ لا	فَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿144﴾ ج	وَمَآ	اَسْـَٔلُكُمْ	عَلَيْهِ
अमानतदार	पस डरो	अल्लाह से	और इताअत करो मेरी	और नहीं	मैं सवाल करता तुमसे	इस पर

مِنْ اَجْرٍ ج	اِنْ	اَجْرِيَ	اِلَّا	عَلٰى	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿145﴾ ط	اَتُتْرَكُوْنَ
किसी अज्र का	नहीं	अज्र मेरा	मगर	ऊपर	रब	अल आलमीन के	क्या तुम छोड़ दिए जाओगे

فِيْ مَا	هٰهُنَآ	اٰمِنِيْنَ ﴿146﴾ لا	فِيْ جَنّٰتٍ	وَّعُيُوْنٍ ﴿147﴾ لا	وَّزُرُوْعٍ	وَّنَخْلٍ
उनमें जो	यहां हैं	अमन से रहने वाले	बाग़ों में	और चश्मों	और खेतों में	और खजूर के दरख़्त

طَلْعُهَا	هَضِيْمٌ ﴿148﴾ ج	وَتَنْحِتُوْنَ	مِنَ الْجِبَالِ	بُيُوْتًا	فٰرِهِيْنَ ﴿149﴾ ج	
ख़ोशे उनके	नर्म व नाज़ुक	और तुम तराशते हो	पहाड़ों में से	घरों को	ख़ूब माहिर बन कर	

فَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿150﴾ ج	وَلَا	تُطِيْعُوْٓا	اَمْرَ	الْمُسْرِفِيْنَ ﴿151﴾ لا	الَّذِيْنَ
पस डरो	अल्लाह से	और इताअत करो मेरी	और ना	तुम इताअत करो	हुक्म की	हद से बढ़ने वालों के	वो जो

يُفْسِدُوْنَ	فِي الْاَرْضِ	وَلَا	يُصْلِحُوْنَ ﴿152﴾	قَالُوْٓا	اِنَّمَآ	اَنْتَ
फ़साद करते हैं	ज़मीन में	और नहीं	वो इस्लाह करते	उन्होंने कहा	बेशक	तू

مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿153﴾ ج	مَآ	اَنْتَ	اِلَّا	بَشَرٌ	مِّثْلُنَا ط	فَاْتِ	بِاٰيَةٍ
सहरज़दा लोगों में से है	नहीं	तू	मगर	एक इंसान	हमारे जैसा	तो ले आ	कोई निशानी

اِنْ	كُنْتَ	مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿154﴾	قَالَ	هٰذِهٖ	نَاقَةٌ	لَّهَا	شِرْبٌ
अगर	है तू	सच्चों में से	उसने कहा	ये है	एक ऊंटनी	उसके लिए है	पानी पीने की बारी

وَّلَكُمْ	شِرْبُ	يَوْمٍ	مَّعْلُوْمٍ ﴿155﴾ ج	وَلَا	تَمَسُّوْهَا	بِسُوْٓءٍ
और तुम्हारे लिए	पानी पीने की बारी	दिन	मालूम के	और ना	तुम छूना उसे	बुराई से

فَيَاْخُذَكُمْ	عَذَابُ	يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿156﴾	فَعَقَرُوْهَا	فَاَصْبَحُوْا
वरना पकड़ लेगा तुम्हें	अज़ाब	बड़े दिन का	तो उन्होंने कूंचें काट डालीं उसकी	तो वो हो गए

HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نٰدِمِيْنَ ﴿157﴾ لا	فَاَخَذَهُمُ	الْعَذَابُ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً ؕ	وَمَا
नादिम	फिर पकड़ लिया उन्हें	अज़ाब ने	यक़ीनन	इसमें	अलबत्ता एक निशानी है	और ना

كَانَ	اَكْثَرُهُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿158﴾	وَاِنَّ	رَبَّكَ	لَهُوَ	الْعَزِيْزُ
थे	अक्सर उनके	ईमान लाने वाले	और बेशक	रब आपका	अलबत्ता वो	बहुत ज़बरदस्त है

الرَّحِيْمُ ﴿159﴾ ع	كَذَّبَتْ	قَوْمُ	لُوْطِ	ۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿160﴾ ج	اِذْ	قَالَ	لَهُمْ
बहुत रहम फ़रमाने वाला है	झुठलाया	क़ौमे	लूत ने	रसूलों को	जब	कहा	उन्हें

ع 8 19 12

اَخُوْهُمْ	لُوْطٌ	اَلَا	تَتَّقُوْنَ ﴿161﴾ ج	اِنِّيْ	لَكُمْ	رَسُوْلٌ	اَمِيْنٌ ﴿162﴾ لا
उनके भाई	लूत ने	क्या नहीं	तुम डरते	बेशक मैं	तुम्हारे लिए	एक रसूल हूं	अमानतदार

فَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَاَطِيْعُوْنِ ﴿163﴾ ج	وَمَآ	اَسْـَٔلُكُمْ	عَلَيْهِ	مِنْ اَجْرٍ ۚ
पस डरो	अल्लाह से	और इताअत करो मेरी	और नहीं	मैं सवाल करता तुमसे	इस पर	किसी अज्र का

اِنْ	اَجْرِيَ	اِلَّا	عَلٰى	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿164﴾ ؕ	اَتَاْتُوْنَ	الذُّكْرَانَ
नहीं	अज्र मेरा	मगर	ऊपर	रब	अल आलमीन के	क्या तुम आते हो	मर्दों के पास

مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿165﴾ لا	وَتَذَرُوْنَ	مَا	خَلَقَ	لَكُمْ	رَبُّكُمْ
तमाम जहान वालों में से	और तुम छोड़ देते हो	जो	पैदा किया	तुम्हारे लिए	तुम्हारे रब ने

مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ	بَلْ	اَنْتُمْ	قَوْمٌ	عٰدُوْنَ ﴿166﴾	قَالُوْا	لَئِنْ
तुम्हारी बीवियों में से	बल्कि	तुम	लोग हो	हद से गुज़रने वाले	उन्होंने कहा	अलबत्ता अगर

لَّمْ	تَنْتَهِ	يٰلُوْطُ	لَتَكُوْنَنَّ	مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿167﴾	قَالَ	اِنِّيْ
ना	तू बाज़ आया	ऐ लूत	अलबत्ता तू ज़रूर हो जाएगा	निकाले जाने वालों में से	उसने कहा	बेशक मैं

لِعَمَلِكُمْ	مِّنَ الْقَالِيْنَ ﴿168﴾ ؕ	رَبِّ	نَجِّنِيْ	وَاَهْلِيْ	مِمَّا
तुम्हारे अमल से	बेज़ार होने वालों में से हूं	ऐ मेरे रब	निजात दे मुझे	और मेरे घर वालों को	उससे जो

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَعْمَلُوْنَ ﴿169﴾	فَنَجَّيْنٰهُ	وَاَهْلَهٗٓ	اَجْمَعِيْنَ ﴿170﴾ لا	اِلَّا	عَجُوْزًا
वो अमल करते हैं	तो निजात दी हमने उसे	और उसके घर वालों को	सबके सबको	सिवाए	एक बुढ़िया के

فِى الْغٰبِرِيْنَ ﴿171﴾ ج	ثُمَّ	دَمَّرْنَا	الْاٰخَرِيْنَ ﴿172﴾ ج	وَاَمْطَرْنَا	عَلَيْهِمْ
जो पीछे रह जाने वालों में थी	फिर	तबाह कर दिया हमने	दूसरों को	और बरसाई हमने	उन पर

مَّطَرًا ج	فَسَآءَ	مَطَرُ	الْمُنْذَرِيْنَ ﴿173﴾	اِنَّ	فِىْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً ط
एक बारिश	तो बहुत बुरी थी	बारिश	डराए जाने वालों की	यक़ीनन	इसमें	अलबत्ता एक निशानी है

وَمَا	كَانَ	اَكْثَرُهُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿174﴾	وَاِنَّ	رَبَّكَ	لَهُوَ
और ना	थे	अक्सर उनके	ईमान लाने वाले	और बेशक	रब आपका	अलबत्ता वो

ع 9 16 13

الْعَزِيْزُ	الرَّحِيْمُ ﴿175﴾ ع	كَذَّبَ	اَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ	الْمُرْسَلِيْنَ ﴿176﴾ ج	اِذْ
बहुत ज़बरदस्त है	निहायत रहम करने वाला है	झुठलाया	ऐका (जंगल) वालों ने	रसूलों को	जब

قَالَ	لَهُمْ	شُعَيْبٌ	اَلَا	تَتَّقُوْنَ ﴿177﴾ ج	اِنِّىْ	لَكُمْ	رَسُوْلٌ
कहा	उन्हें	शुऐब ने	क्या नहीं	तुम डरते	बेशक मैं	तुम्हारे लिए	एक रसूल हूं

اَمِيْنٌ ﴿178﴾ لا	فَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَاَطِيْعُوْنِ ﴿179﴾ ج	وَمَآ	اَسْـَٔلُكُمْ	عَلَيْهِ
अमानतदार	पस डरो	अल्लाह से	और इताअत करो मेरी	और नहीं	मैं सवाल करता तुम से	इस पर

مِنْ اَجْرٍ ج	اِنْ	اَجْرِىَ	اِلَّا	عَلٰى	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿180﴾ ط	اَوْفُوا
किसी अज्र का	नहीं	अज्र मेरा	मगर	ऊपर	रब	अल आलमीन के	पूरा करो

الْكَيْلَ	وَلَا	تَكُوْنُوْا	مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿181﴾ ج	وَزِنُوْا	بِالْقِسْطَاسِ
नाप को	और ना	तुम हो जाओ	नुक़्सान देने वालों में से	और वज़न करो	साथ तराज़ू

الْمُسْتَقِيْمِ ﴿182﴾ ج	وَلَا	تَبْخَسُوا	النَّاسَ	اَشْيَآءَهُمْ	وَلَا	تَعْثَوْا
सीधी के	और ना	तुम कम करके दो	लोगों को	चीज़ें उनकी	और ना	तुम फ़साद करो

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِي الْاَرْضِ	مُفْسِدِيْنَ ﴿183﴾ ج	وَاتَّقُوا	الَّذِيْ	خَلَقَكُمْ	وَالْجِبِلَّةَ
ज़मीन में	मुफ़सिद बन कर	और डरो	उससे जिसने	पैदा किया तुम्हें	और मख़्लूक़

الْاَوَّلِيْنَ ﴿184﴾ ط	قَالُوْٓا	اِنَّمَآ	اَنْتَ	مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿185﴾ لا	وَمَآ	اَنْتَ
पहली को	उन्होंने कहा	बेशक	तू	सहरज़दा लोगों में से है	और नहीं	तू

اِلَّا	بَشَرٌ	مِّثْلُنَا	وَاِنْ	نَّظُنُّكَ	لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿186﴾ ج	فَاَسْقِطْ
मगर	एक इंसान	हम जैसा	और बेशक	हम गुमान करते हैं तुझे	अलबत्ता झूठों में से	पस तू गिरा दे

عَلَيْنَا	كِسَفًا	مِّنَ السَّمَآءِ	اِنْ	كُنْتَ	مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿187﴾ ط	قَالَ
हम पर	एक टुकड़ा	आसमान से	अगर	है तू	सच्चों में से	उसने कहा

رَبِّيْٓ	اَعْلَمُ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ ﴿188﴾	فَكَذَّبُوْهُ	فَاَخَذَهُمْ	عَذَابُ
मेरा रब	ज़्यादा जानता है	उसे जो	तुम अमल करते हो	तो उन्होंने झुठला दिया उसे	तो पकड़ लिया उन्हें	अज़ाब ने

يَوْمِ	الظُّلَّةِ ط	اِنَّهٗ	كَانَ	عَذَابَ	يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿189﴾	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ
दिन	सायबान के	बेशक वो	था	अज़ाब	बड़े दिन का	बेशक	उसमें

لَاٰيَةً ط	وَمَا	كَانَ	اَكْثَرُهُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿190﴾	وَاِنَّ	رَبَّكَ
अलबत्ता एक निशानी है	और ना	थे	अक्सर उनके	ईमान लाने वाले	और बेशक	रब आपका

لَهُوَ	الْعَزِيْزُ	الرَّحِيْمُ ﴿191﴾ ع	وَاِنَّهٗ	لَتَنْزِيْلُ	رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿192﴾ ط	ع 10 16 14
अलबत्ता वो	बहुत ज़बरदस्त है	निहायत रहम करने वाला है	और बेशक वो	अलबत्ता नाज़िल करदा है	रब अल आलमीन की तरफ़ से	

نَزَلَ	بِهِ	الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿193﴾ لا	عَلٰى قَلْبِكَ	لِتَكُوْنَ
उतरा	उसे लेकर	रूहुल अमीन	ऊपर आपके दिल के	ताकि आप हों

مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿194﴾ لا	بِلِسَانٍ	عَرَبِيٍّ	مُّبِيْنٍ ﴿195﴾ ط	وَاِنَّهٗ	لَفِيْ زُبُرِ
डराने वालों में से	साथ ज़बान	अरबी	वाज़ेह के	और बेशक वो	अलबत्ता सहीफ़ों में है

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عُلَمٰٓؤُا	يَّعْلَمَهٗ	اَنْ	اٰيَةً	لَّهُمْ	يَكُنْ	اَوَلَمْ	الْاَوَّلِيْنَ (196)
उलेमा	जानते हों उसे	कि	कोई निशानी	उनके लिए	है	क्या भला नहीं	पहलों के

الْاَعْجَمِيْنَ (198) لا	عَلٰى بَعْضِ	نَزَّلْنٰهُ	وَلَوْ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ (197) ط
अजमियों में से	किसी पर	नाज़िल करते हम उसे	और अगर	बनी इस्राईल के

سَلَكْنٰهُ	كَذٰلِكَ	مُؤْمِنِيْنَ (199) ط	بِهٖ	كَانُوْا	مَّا	عَلَيْهِمْ	فَقَرَاَهٗ
गुज़ारा हमने उसे	इसी तरह	ईमान लाने वाले	उस पर	होते वो	ना	उन पर	फिर वो पढ़ता उसे

الْعَذَابَ	يَرَوُا	حَتّٰى	بِهٖ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	الْمُجْرِمِيْنَ (200) ط	فِيْ قُلُوْبِ
अज़ाब	वो देख लें	यहां तक कि	इस पर	नहीं वो ईमान लाएंगे	मुजरिमों के	दिलों में

هَلْ	فَيَقُوْلُوْا	لَا يَشْعُرُوْنَ (202) لا	وَّهُمْ	بَغْتَةً	فَيَاْتِيَهُمْ	الْاَلِيْمَ (201) لا
क्या	फिर वो कहेंगे	ना वो शऊर रखते होंगे	और वो	अचानक	तो वो आ जाएगा उन पर	दर्दनाक

اِنْ	اَفَرَءَيْتَ	يَسْتَعْجِلُوْنَ (204)	اَفَبِعَذَابِنَا	مُنْظَرُوْنَ (203) ط	نَحْنُ
अगर	क्या भला देखा आपने	वो जल्दी मांगते हैं	क्या फिर हमारे अज़ाब को	मोहलत दिए जाने वाले हैं	हम

يُوْعَدُوْنَ (206) لا	كَانُوْا	مَّا	جَآءَهُمْ	ثُمَّ	سِنِيْنَ (205) لا	مَّتَّعْنٰهُمْ
वो वादा दिए जाते	थे वो	जिसका	आ जाए उनके पास	फिर	कई साल	फ़ायदा दें हम उन्हें

اَهْلَكْنَا	وَمَآ	يُمَتَّعُوْنَ (207) ط	كَانُوْا	مَّا	عَنْهُمْ	اَغْنٰى	مَآ
हलाक किया हमने	और नहीं	वो फ़ायदा दिए जाते	थे वो	जो	उन्हें	काम आएगा	ना

كُنَّا	وَمَا	ذِكْرٰى قف	مُنْذِرُوْنَ (208) قلے	لَهَا	اِلَّا	مِنْ قَرْيَةٍ
थे हम	और ना	नसीहत के तौर पर	डराने वाले थे	उसके लिए	मगर	किसी बस्ती को

لَهُمْ	يَنْۢبَغِيْ	وَمَا	الشَّيٰطِيْنُ (210)	بِهِ	تَنَزَّلَتْ	وَمَا	ظٰلِمِيْنَ (209)
उनके	लायक़	और नहीं	शयातीन	उसे लेकर	उतरे	और नहीं	ज़ालिम

AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

وَمَا	يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿211﴾ ط	اِنَّهُمْ	عَنِ السَّمْعِ	لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿212﴾ ط	فَلَا	تَدْعُ
और नहीं	वो इस्तिताअत रखते	बेशक वो	सुनने से	अलबत्ता अलग किए हुए हैं	पस ना	आप पुकारिए

مَعَ	اللّٰهِ	اِلٰهًا	اٰخَرَ	فَتَكُوْنَ	مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿213﴾ ج	وَاَنْذِرْ
साथ	अल्लाह के	इलाह	दूसरा	वरना आप हो जाऐंगे	अज़ाब दिए जाने वालों में से	और डराइए

عَشِيْرَتَكَ	الْاَقْرَبِيْنَ ﴿214﴾ لا	وَاخْفِضْ	جَنَاحَكَ	لِمَنِ	اتَّبَعَكَ
अपने रिश्तेदारों को	जो क़रीबी हैं	और झुका दीजिए	अपना बाज़ू	वास्ते उसके जो	पैरवी करे आपकी

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿215﴾ ج	فَاِنْ	عَصَوْكَ	فَقُلْ	اِنِّيْ	بَرِيْٓءٌ	مِّمَّا
मोमिनों में से	फिर अगर	वो नाफ़रमानी करें आपकी	तो कह दीजिए	बेशक मैं	बरी उज़्ज़िम्मा हूं	उससे जो

تَعْمَلُوْنَ ﴿216﴾ ج	وَتَوَكَّلْ	عَلَى الْعَزِيْزِ	الرَّحِيْمِ ﴿217﴾ لا	الَّذِيْ	يَرٰىكَ
तुम अमल कर रहे हो	और तवक्कल कीजिए	ऊपर बहुत ज़बरदस्त	निहायत रहम करने वाले के	वो जो	देखता है आपको

حِيْنَ	تَقُوْمُ ﴿218﴾ لا	وَتَقَلُّبَكَ	فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿219﴾	اِنَّهٗ	هُوَ
जिस वक़्त	आप खड़े होते हैं	और नक़्ल व हरकत आपकी	सज्दा करने वालों में	बेशक वो	वो ही है

السَّمِيْعُ	الْعَلِيْمُ ﴿220﴾	هَلْ	اُنَبِّئُكُمْ	عَلٰى مَنْ	تَنَزَّلُ	الشَّيٰطِيْنُ ﴿221﴾ ط
ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब जानने वाला	क्या	मैं बताऊं तुम्हें	किस पर	उतरते हैं	शयातीन

تَنَزَّلُ	عَلٰى	كُلِّ	اَفَّاكٍ	اَثِيْمٍ ﴿222﴾ لا	يُّلْقُوْنَ	السَّمْعَ	وَاَكْثَرُهُمْ
उतरते हैं	ऊपर	हर	बहुत झूठे	बहुत गुनाहगार के	वो डालते हैं	कानों में (सुनी सुनाई बात)	और अक्सर उनके

كٰذِبُوْنَ ﴿223﴾ ط	وَالشُّعَرَآءُ	يَتَّبِعُهُمُ	الْغَاوٗنَ ﴿224﴾ ط	اَلَمْ	تَرَ	اَنَّهُمْ
झूठे हैं	और शुअरा	पैरवी करते हैं उनकी	बहके हुए लोग	क्या नहीं	आपने देखा	कि बेशक वो

فِيْ كُلِّ وَادٍ	يَّهِيْمُوْنَ ﴿225﴾ لا	وَاَنَّهُمْ	يَقُوْلُوْنَ	مَا	لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿226﴾ لا
हर वादी में	वो सरगर्दां फिरते हैं	और बेशक वो	वो कहते हैं	वो जो	नहीं वो करते

اِلَّا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	وَذَكَرُوا	اللّٰهَ
सिवाए	उनके जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	और उन्होंने याद किया	अल्लाह को

كَثِيْرًا	وَّانْتَصَرُوْا	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	ظُلِمُوْا ؕ	وَسَيَعْلَمُ
बकसरत	और उन्होंने बदला लिया	बाद इसके	जो	वो ज़ुल्म किए गए	और अनक़रीब जान लेंगे

ع 11 36 15

الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْٓا	اَىَّ	مُنْقَلَبٍ	يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿227﴾ ع
वो जिन्होंने	ज़ुल्म किया	कौन सी	लौटने की जगह	वो लौटेंगे

سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ 48 — 27

اٰيَاتُهَا: 93 — رُكُوْعَاتُهَا: 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰسٓ قف	تِلْكَ	اٰيٰتُ	الْقُرْاٰنِ	وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ﴿1﴾ لا	هُدًى	وَّبُشْرٰى
طٰسٓ	ये	आयात हैं	क़ुरआन की	और वाज़ेह किताब की	हिदायत	और ख़ुशख़बरी है

لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿2﴾ لا	الَّذِيْنَ	يُقِيْمُوْنَ	الصَّلٰوةَ	وَيُؤْتُوْنَ	الزَّكٰوةَ	وَهُمْ
ईमान लाने वालों के लिए	वो जो	क़ायम करते हैं	नमाज़	और वो अदा करते हैं	ज़कात	और वो

بِالْاٰخِرَةِ	هُمْ	يُوْقِنُوْنَ ﴿3﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِالْاٰخِرَةِ
आख़िरत पर	वो	वो यक़ीन रखते हैं	बेशक	वो जो	नहीं वो ईमान लाते	आख़िरत पर

زَيَّنَّا	لَهُمْ	اَعْمَالَهُمْ	فَهُمْ	يَعْمَهُوْنَ ﴿4﴾ ؕ	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ
मुज़य्यन कर दिए हमने	उनके लिए	आमाल उनके	तो वो	वो भटकते फिरते हैं	यही लोग हैं	वो जो

لَهُمْ	سُوْٓءُ	الْعَذَابِ	وَهُمْ	فِى الْاٰخِرَةِ	هُمُ	الْاَخْسَرُوْنَ ﴿5﴾
उनके लिए	बुरा	अज़ाब है	और वो	आख़िरत में	वो ही	सबसे ज़्यादा ख़सारे वाले हैं

الثلثة

وَاِنَّكَ	لَتُلَقَّى	الْقُرْاٰنَ	مِنْ لَّدُنْ	حَكِيْمٍ	عَلِيْمٍ ﴿6﴾	اِذْ
और बेशक आप	अलबत्ता आप दिए जाते हैं	क़ुरआन	पास से	बहुत हिक्मत वाले	बहुत इल्म वाले के	जब

HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَاٰتِيْكُمْ	نَارًا ؕ	اٰنَسْتُ	اِنِّيْٓ	لِاَهْلِهٖٓ	مُوْسٰى	قَالَ
अनक़रीब मैं लाऊंगा तुम्हारे पास	एक आग	देखी है मैंने	बेशक मैं	अपने घर वालों से	मूसा ने	कहा

لَّعَلَّكُمْ	قَبَسٍ	بِشِهَابٍ	اٰتِيْكُمْ	اَوْ	بِخَبَرٍ	مِّنْهَا
ताकि तुम	जलता हुआ	एक अंगारा	मैं लाऊंगा तुम्हारे पास	या	कोई ख़बर	उसमें से

مَنْ	بُوْرِكَ	اَنْۢ	نُوْدِيَ	جَآءَهَا	فَلَمَّا	تَصْطَلُوْنَ ⑦
जो	बरकत दिया गया	कि	वो पुकारा गया	वो आया उस (आग) के पास	तो जब	तुम ताप सको

الْعٰلَمِيْنَ ⑧	رَبِّ	اللّٰهِ	وَسُبْحٰنَ	حَوْلَهَا ؕ	وَمَنْ	فِي النَّارِ
तमाम जहानों का	जो रब है	अल्लाह	और पाक है	उसके इर्द-गिर्द है	और जो	आग में है

عَصَاكَ ؕ	وَاَلْقِ	الْحَكِيْمُ ⑨ ۙ	الْعَزِيْزُ	اللّٰهُ	اَنَا	اِنَّهٗٓ	يٰمُوْسٰٓى
लाठी अपनी	और डाल दे	बहुत हिक्मत वाला	निहायत ज़बरदस्त	अल्लाह हूं	मैं ही	बेशक	ऐ मूसा

وَّلَمْ	مُدْبِرًا	وَّلّٰى	جَآنٌّ	كَاَنَّهَا	تَهْتَزُّ	رَاٰهَا	فَلَمَّا
और ना	पीठ फेरते हुए	वो मुंह मोड़ गया	साँप है	गोया कि वो	कि वो हरकत करती है	उसने देखा उसे	तो जब

الْمُرْسَلُوْنَ ⑩ ۖق	لَدَيَّ	لَا يَخَافُ	اِنِّيْ	لَا تَخَفْ قف	يٰمُوْسٰى	يُعَقِّبْ ؕ
रसूल	मेरे पास	नहीं डरा करते	बेशक मैं	ना तुम डरो	ऐ मूसा	उसने पीछे मुड़ कर देखा

فَاِنِّيْ	سُوْٓءٍ	بَعْدَ	حُسْنًاۢ	بَدَّلَ	ثُمَّ	ظَلَمَ	مَنْ	اِلَّا
तो बेशक मैं	बुराई के	बाद	नेकी से	उसने बदल दिया	फिर	ज़ुल्म किया	जिसने	मगर

بَيْضَآءَ	تَخْرُجْ	فِيْ جَيْبِكَ	يَدَكَ	وَاَدْخِلْ	رَّحِيْمٌ ⑪	غَفُوْرٌ
सफ़ेद/चमकता हुआ	वो निकलेगा	अपने गिरेबान में	हाथ अपना	और दाख़िल कर दे	निहायत रहम करने वाला हूं	बहुत बख़्शने वाला हूं

اِنَّهُمْ	وَقَوْمِهٖ ؕ	اِلٰى فِرْعَوْنَ	فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ	سُوْٓءٍ قف	مِنْ غَيْرِ
बेशक वो	और उसकी क़ौम के	तरफ़ फ़िरऔन	नौ निशानियों में से हैं	मर्ज़/तकलीफ़ के	बग़ैर

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كَانُوْا	قَوْمًا	فٰسِقِيْنَ ﴿12﴾	فَلَمَّا	جَآءَتْهُمْ	اٰيٰتُنَا	مُبْصِرَةً
हैं वो	लोग	नाफ़रमान	तो जब	आ गईं उनके पास	निशानियां हमारी	वाज़ेह

قَالُوْا	هٰذَا	سِحْرٌ	مُّبِيْنٌ ﴿13﴾ ج	وَجَحَدُوْا	بِهَا	وَاسْتَيْقَنَتْهَآ
उन्होंने कहा	ये	जादू है	खुल्लम-खुल्ला	और उन्होंने इंकार किया	उनका	हालांकि यक़ीन कर लिया था उसका

اَنْفُسُهُمْ	ظُلْمًا	وَّعُلُوًّا ؕ	فَانْظُرْ	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ
उनके दिलों ने	ज़ुल्म	और सरकशी से	तो देखो	किस तरह	हुआ	अंजाम

ع 1 14 16

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿14﴾ ع	وَلَقَدْ	اٰتَيْنَا	دَاوٗدَ	وَسُلَيْمٰنَ	عِلْمًا ج	وَقَالَا
फ़साद करने वालों का	और अलबत्ता तहक़ीक़	दिया हमने	दाऊद	और सुलैमान को	इल्म	और उन दोनों ने कहा

الْحَمْدُ	لِلّٰهِ	الَّذِيْ	فَضَّلَنَا	عَلٰى كَثِيْرٍ	مِّنْ عِبَادِهِ
सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	जिसने	फ़ज़ीलत दी हमें	अक्सरियत पर	अपने बंदों में से

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿15﴾	وَوَرِثَ	سُلَيْمٰنُ	دَاوٗدَ	وَقَالَ	يٰٓاَيُّهَا	النَّاسُ
जो ईमान लाने वाले हैं	और वारिस हुआ	सुलैमान	दाऊद का	और उसने कहा	ऐ	लोगो

عُلِّمْنَا	مَنْطِقَ	الطَّيْرِ	وَاُوْتِيْنَا	مِنْ كُلِّ	شَيْءٍ ؕ	اِنَّ	هٰذَا
सिखाए गए हम	बोली	परिंदों की	और दिए गए हम	हर	चीज़ (ज़रूरत की)	बेशक	ये

لَهُوَ	الْفَضْلُ	الْمُبِيْنُ ﴿16﴾	وَحُشِرَ	لِسُلَيْمٰنَ	جُنُوْدُهٗ	مِنَ الْجِنِّ
अलबत्ता वो	फ़ज़्ल है	वाज़ेह	और इकट्ठे किए गए	सुलैमान के लिए	उसके लश्कर	जिन्नों में से

وَالْاِنْسِ	وَالطَّيْرِ	فَهُمْ	يُوْزَعُوْنَ ﴿17﴾	حَتّٰٓى	اِذَآ	اَتَوْا
और इंसानों	और परिंदों में से	तो वो	वो गिरोहों में तक़्सीम किए जाते हैं	यहां तक कि	जब	वो आए

عَلٰى وَادِ	النَّمْلِ ۙ	قَالَتْ	نَمْلَةٌ	يٰٓاَيُّهَا	النَّمْلُ	ادْخُلُوْا
वादी पर	चीटियों की	कहने लगी	एक चींटी	ऐ	चीटियों	दाख़िल हो जाओ

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَسٰكِنَكُمْ ۚ	لَا يَحْطِمَنَّكُمْ	سُلَيْمٰنُ	وَجُنُوْدُهٗ	وَهُمْ	لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿18﴾
अपने घरों में	ना कुचल डालें तुम्हें	सुलैमान	और लश्कर उसके	और वो	वो शऊर ना रखते हों

فَتَبَسَّمَ	ضَاحِكًا	مِّنْ قَوْلِهَا	وَقَالَ	رَبِّ	اَوْزِعْنِيْٓ	اَنْ
तो वो मुस्कुरा दिया	हंसते हुए	उसकी बात से	और उसने कहा	ऐ मेरे रब	तौफ़ीक़ दे मुझे	कि

اَشْكُرَ	نِعْمَتَكَ	الَّتِيْٓ	اَنْعَمْتَ	عَلَيَّ	وَعَلٰى	وَالِدَيَّ	وَاَنْ
मैं शुक्र अदा करूं	तेरी नेअमत का	वो जो	इनआम की तू ने	मुझ पर	और ऊपर	मेरे वालिदैन के	और ये कि

اَعْمَلَ	صَالِحًا	تَرْضٰىهُ	وَاَدْخِلْنِيْ	بِرَحْمَتِكَ	فِيْ عِبَادِكَ
मैं अमल करूं	नेक	तू राज़ी हो जाए जिससे	और दाख़िल कर मुझे	साथ अपनी रहमत के	अपने बंदों में

الصّٰلِحِيْنَ ﴿19﴾	وَتَفَقَّدَ	الطَّيْرَ	فَقَالَ	مَا	لِيَ	لَآ اَرَى	الْهُدْهُدَ
जो नेक हैं	और उसने जायज़ा लिया	परिंदों का	फिर कहा	क्या है	मुझे	नहीं मैं देखता	हुदहुद को

اَمْ	كَانَ	مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ﴿20﴾	لَاُعَذِّبَنَّهٗ	عَذَابًا	شَدِيْدًا	اَوْ
या	है वो	ग़ायब होने वालों में से	अलबत्ता मैं ज़रूर सज़ा दूं गा उसे	सज़ा	शदीद	या

لَاَاْذْبَحَنَّهٗٓ	اَوْ	لَيَاْتِيَنِّيْ	بِسُلْطٰنٍ	مُّبِيْنٍ ﴿21﴾	فَمَكَثَ
अलबत्ता मैं ज़रूर ज़िबह करुं गा उसे	या	अलबत्ता वो ज़रूर लाए मेरे पास	कोई दलील	वाज़ेह	तो वो ठहरा

غَيْرَ بَعِيْدٍ	فَقَالَ	اَحَطْتُّ	بِمَا	لَمْ	تُحِطْ	بِهٖ
थोड़ी देर	तो कहा (हुदहुद ने)	अहाता किया मैंने	उसका जो	नहीं	आपने अहाता किया	जिसका

وَجِئْتُكَ	مِنْ سَبَاٍ	بِنَبَاٍ	يَّقِيْنٍ ﴿22﴾	اِنِّيْ	وَجَدْتُّ	امْرَاَةً
और लाया हूं मैं आपके पास	सबा से	एक ख़बर	यक़ीनी	बेशक मैं	पाया मैंने	एक औरत को

تَمْلِكُهُمْ	وَاُوْتِيَتْ	مِنْ كُلِّ	شَيْءٍ	وَّلَهَا	عَرْشٌ	عَظِيْمٌ ﴿23﴾
वो हुक्मरानी करती है उन पर	और वो दी गई है	हर	चीज़ (ज़रूरत की)	और उसके लिए	तख़्त है	बहुत बड़ा

وَجَدْتُّهَا	وَقَوْمَهَا	يَسْجُدُوْنَ	لِلشَّمْسِ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	وَزَيَّنَ
पाया मैंने उसे	और उसकी क़ौम को	वो सज्दा करते हैं	सूरज को	सिवाए	अल्लाह के	और मुज़य्यन कर दिए

لَهُمُ	الشَّيْطٰنُ	اَعْمَالَهُمْ	فَصَدَّهُمْ	عَنِ السَّبِيْلِ	فَهُمْ
उनके लिए	शैतान ने	आमाल उनके	फिर उसने रोक दिया उन्हें	(सीधे) रास्ते से	पस वो

لَا يَهْتَدُوْنَ ۙ 24	اَلَّا	يَسْجُدُوْا	لِلّٰهِ	الَّذِيْ	يُخْرِجُ	الْخَبْءَ
नहीं वो हिदायत पाते	ये कि नहीं	वो सज्दा करते	अल्लाह के लिए	वो जो	निकालता है	छुपी चीज़ को

فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَيَعْلَمُ	مَا	تُخْفُوْنَ	وَمَا	تُعْلِنُوْنَ 25
आसमानों में	और ज़मीन में	और वो जानता है	जो कुछ	तुम छुपाते हो	और जो कुछ	तुम ज़ाहिर करते हो

اَللّٰهُ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ	رَبُّ	الْعَرْشِ	الْعَظِيْمِ 26 السجدة	قَالَ
अल्लाह	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही	रब है	अर्शे	अज़ीम का	उसने कहा

السجدة 8

سَنَنْظُرُ	اَصَدَقْتَ	اَمْ	كُنْتَ	مِنَ الْكٰذِبِيْنَ 27	اِذْهَبْ	بِّكِتٰبِيْ
अनक़रीब हम देखेंगे	क्या सच कहा तू ने	या	है तू	झूठों में से	ले जाओ	ख़त मेरा

هٰذَا	فَاَلْقِهْ	اِلَيْهِمْ	ثُمَّ	تَوَلَّ	عَنْهُمْ	فَانْظُرْ	مَاذَا
ये	फिर डाल दो इसे	तरफ़ उनके	फिर	हट जाओ	उनसे	फिर देखो	क्या कुछ

يَرْجِعُوْنَ 28	قَالَتْ	يٰۤاَيُّهَا	الْمَلَؤُا	اِنِّيْۤ	اُلْقِيَ	اِلَيَّ	كِتٰبٌ
वो जवाब देते हैं	बोली (मलका)	ऐ	सरदारो	बेशक मैं	डाला गया	मेरी तरफ़	एक ख़त

كَرِيْمٌ 29	اِنَّهٗ	مِنْ سُلَيْمٰنَ	وَاِنَّهٗ	بِسْمِ	اللّٰهِ	الرَّحْمٰنِ
मुअज़्ज़िज़	बेशक वो	सुलैमान की तरफ़ से है	और बेशक वो	साथ नाम	अल्लाह के है	जो बड़ा मेहरबान

الرَّحِيْمِ ۙ 30	اَلَّا	تَعْلُوْا	عَلَيَّ	وَاْتُوْنِيْ	مُسْلِمِيْنَ 31 ع	قَالَتْ
निहायत रहम करने वाला है	कि ना	तुम सरकशी करो	मुझ पर	और आ जाओ मेरे पास	फ़रमांबरदार बन कर	वो कहने लगी

ع 2 17 17

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَمْرًا	قَاطِعَةً	كُنْتُ	مَا	فِيْٓ اَمْرِيْ ۚ	اَفْتُوْنِيْ	الْمَلَؤُا	يٰٓاَيُّهَا
किसी काम का	क़तई फ़ैसला करने वाली	हूं मैं	नहीं	मेरे मामले में	जवाब दो मुझे	सरदारो	ऐ

وَّاُولُوْا بَاْسٍ	اُولُوْا قُوَّةٍ	نَحْنُ	قَالُوْا	تَشْهَدُوْنِ (32)	حَتّٰى
और जंगजू हैं	क़ुव्वत वाले हैं	हम	उन्होंने कहा	तुम मौजूद हो मेरे पास	यहां तक कि

قَالَتْ	تَاْمُرِيْنَ (33)	مَاذَا	فَانْظُرِيْ	اِلَيْكِ	وَّالْاَمْرُ	شَدِيْدٍ ڏ
वो कहने लगी	तुम हुक्म देती हो	क्या	तो देख लो/ग़ौर कर लो	तुम्हारी तरफ़ है	और फ़ैसला	सख़्त

وَجَعَلُوْٓا	اَفْسَدُوْهَا	قَرْيَةً	دَخَلُوْا	اِذَا	الْمُلُوْكَ	اِنَّ
और वो कर देते हैं	वो तबाह कर देते हैं उसे	किसी बस्ती में	वो दाख़िल होते हैं	जब	बादशाह	बेशक

مُرْسِلَةٌ	وَاِنِّيْ	يَفْعَلُوْنَ (34)	وَكَذٰلِكَ	اَذِلَّةً ۚ	اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ
भेजने वाली हूं	और बेशक मैं	ये करेंगे	और इसी तरह	ज़लील	उसके मुअज़्ज़िज़ बाशिंदों को

فَلَمَّا	الْمُرْسَلُوْنَ (35)	يَرْجِعُ	بِمَ	فَنٰظِرَةٌۢ	بِهَدِيَّةٍ	اِلَيْهِمْ
तो जब	भेजे हुए (क़ासिद)	लौटते हैं	साथ किस चीज़ के	फिर देखने वाली हूं	एक हदिया	तरफ़ उनके

اللّٰهُ	اٰتٰىنِۦَ	فَمَآ	بِمَالٍ ۡ	اَتُمِدُّوْنَنِ	قَالَ	سُلَيْمٰنَ	جَاۗءَ
अल्लाह ने	अता किया मुझे	तो जो	साथ माल के	क्या तुम मदद देते हो मुझे	उसने कहा	सुलैमान के पास	वो आया

تَفْرَحُوْنَ (36)	بِهَدِيَّتِكُمْ	اَنْتُمْ	بَلْ	اٰتٰىكُمْ ۚ	مِّمَّآ	خَيْرٌ
तुम ख़ुश होते हो	साथ अपने हदिये के	तुम ही	बल्कि	उसने अता किया तुम्हें	उससे जो	बेहतर है

بِهَا	لَهُمْ	لَّا قِبَلَ	بِجُنُوْدٍ	فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ	اِلَيْهِمْ	اِرْجِعْ
उनका	उनके लिए	नहीं कोई मुक़ाबला	ऐसे लश्करों को	पस अलबत्ता हम ज़रूर लाएंगे उनके पास	उनकी तरफ़	लौट जाओ

يٰٓاَيُّهَا	قَالَ	صٰغِرُوْنَ (37)	وَّهُمْ	اَذِلَّةً	مِّنْهَآ	وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ
ऐ	कहा	ख़्वार होंगे	इस हाल में कि वो	ज़लील करके	उससे	और अलबत्ता हम ज़रूर निकाल देंगे उन्हें

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمَلَؤُا	اَيُّكُمْ	يَاْتِيْنِيْ	بِعَرْشِهَا	قَبْلَ	اَنْ	يَّاْتُوْنِيْ
सरदारो	कौन तुम में से	लाएगा मेरे पास	तख़्त उसका	इससे पहले	कि	वो आ जाऐं मेरे पास

مُسْلِمِيْنَ ﴿38﴾	قَالَ	عِفْرِيْتٌ	مِّنَ الْجِنِّ	اَنَا	اٰتِيْكَ	بِهٖ	قَبْلَ
फ़रमांबरदार बन कर	कहा	एक देव ने	जिन्नों में से	मैं	मैं ले आऊंगा आपके पास	उसे	इससे क़ब्ल

اَنْ	تَقُوْمَ	مِنْ مَّقَامِكَ ۚ	وَاِنِّيْ	عَلَيْهِ	لَقَوِيٌّ	اَمِيْنٌ ﴿39﴾
कि	आप खड़े हों	अपनी जगह से	और बेशक मैं	इस पर	अलबत्ता क़ुव्वत रखने वाला	बहुत अमानतदार हूं

قَالَ	الَّذِيْ	عِنْدَهٗ	عِلْمٌ	مِّنَ الْكِتٰبِ	اَنَا	اٰتِيْكَ	بِهٖ
कहा	उसने	जिसके पास	इल्म था	किताब का	मैं	मैं ले आऊंगा आपके पास	उसे

قَبْلَ	اَنْ	يَّرْتَدَّ	اِلَيْكَ	طَرْفُكَ ؕ	فَلَمَّا	رَاٰهُ	مُسْتَقِرًّا
इससे पहले	कि	लौटे	आपकी तरफ़	नज़र आपकी	फिर जब	उसने देखा उसे	रखा हुआ

عِنْدَهٗ	قَالَ	هٰذَا	مِنْ فَضْلِ	رَبِّيْ ۖ	لِيَبْلُوَنِيْٓ	ءَاَشْكُرُ	اَمْ
अपने पास	उसने कहा	ये	फ़ज़्ल से है	मेरे रब के	ताकि वो आज़माए मुझे	क्या मैं शुक्र करता हूं	या

اَكْفُرُ ؕ	وَمَنْ	شَكَرَ	فَاِنَّمَا	يَشْكُرُ	لِنَفْسِهٖ ۚ	وَمَنْ	كَفَرَ
मैं नाशुक्री करता हूं	और जिसने	शुक्र किया	तो यक़ीनन	वो शुक्र करेगा	अपने ही लिए	और जिसने	कुफ़्र किया

فَاِنَّ	رَبِّيْ	غَنِيٌّ	كَرِيْمٌ ﴿40﴾	قَالَ	نَكِّرُوْا	لَهَا	عَرْشَهَا
तो यक़ीनन	मेरा रब	बहुत बेनियाज़ है	निहायत इज़्ज़त वाला है	उसने कहा	अंजाना कर दो	उसके लिए	तख़्त उसका

فَلَمَّا	لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿41﴾	مِنَ الَّذِيْنَ	تَكُوْنُ	اَمْ	اَتَهْتَدِيْٓ	نَنْظُرْ
तो जब	नहीं वो हिदायत पाते	उनमें से जो	होती है वो	या	क्या वो हिदायत पाती है	हम देखते हैं

وَاُوْتِيْنَا	هُوَ ۚ	كَاَنَّهٗ	قَالَتْ	عَرْشُكِ ؕ	اَهٰكَذَا	قِيْلَ	جَآءَتْ
और दिए गए थे हम	वो ही है	गोया कि वो	वो बोली	तख़्त तेरा	क्या इसी तरह का है	कहा गया	वो आ गई

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْعِلْمَ	مِنْ قَبْلِهَا	وَكُنَّا	مُسْلِمِيْنَ ﴿42﴾	وَصَدَّهَا	مَا	كَانَتْ
इल्म	इससे पहले ही	और थे हम	फ़रमांबरदार	और रोक रखा था उसे	जिसकी	थी वो

تَّعْبُدُ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ ؕ	اِنَّهَا	كَانَتْ	مِنْ قَوْمٍ	كٰفِرِيْنَ ﴿43﴾	قِيْلَ
वो इबादत करती	सिवाए	अल्लाह के	बेशक वो	थी वो	क़ौम से	काफ़िरों की	कहा गया

لَهَا	ادْخُلِي	الصَّرْحَ ۚ	فَلَمَّا	رَاَتْهُ	حَسِبَتْهُ	لُجَّةً	وَّكَشَفَتْ
उसे	दाख़िल हो जाओ	महल में	तो जब	उसने देखा उसे	वो समझी उसे	गहरा पानी	और उसने खोल दीं

عَنْ سَاقَيْهَا ؕ	قَالَ	اِنَّهٗ	صَرْحٌ	مُّمَرَّدٌ	مِّنْ قَوَارِيْرَ ؕ	قَالَتْ
पिंडलियां अपनी	उसने कहा	बेशक वो	महल है	चिकना	शीशों से (बनाया गया)	वो कहने लगी

رَبِّ	اِنِّيْ	ظَلَمْتُ	نَفْسِيْ	وَاَسْلَمْتُ	مَعَ	سُلَيْمٰنَ	لِلّٰهِ
ऐ मेरे रब	बेशक मैं	ज़ुल्म किया मैंने	अपनी जान पर	और इस्लाम ले आई मैं	साथ	सुलैमान के	अल्लाह के लिए

ع 3 13 18

رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿44﴾ ع	وَلَقَدْ	اَرْسَلْنَآ	اِلٰى ثَمُوْدَ	اَخَاهُمْ	صٰلِحًا
जो रब है	तमाम जहानों का	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने	तरफ़ समूद के	उनके भाई	सालेह को

اَنِ	اعْبُدُوا	اللّٰهَ	فَاِذَا	هُمْ	فَرِيْقٰنِ	يَخْتَصِمُوْنَ ﴿45﴾	قَالَ
कि	इबादत करो	अल्लाह की	तो यकायक	वो	दो फ़रीक़ होकर	वो झगड़ रहे थे	उसने कहा

يٰقَوْمِ	لِمَ	تَسْتَعْجِلُوْنَ	بِالسَّيِّئَةِ	قَبْلَ	الْحَسَنَةِ ۚ	لَوْلَا
ऐ मेरी क़ौम	क्यों	तुम जल्दी मांगते हो	बुराई को	क़ब्ल	भलाई से	क्यों नहीं

تَسْتَغْفِرُوْنَ	اللّٰهَ	لَعَلَّكُمْ	تُرْحَمُوْنَ ﴿46﴾	قَالُوا	اطَّيَّرْنَا	بِكَ
तुम बख़्शिश मांगते	अल्लाह से	ताकि तुम	तुम रहम किए जाओ	उन्होंने कहा	बुरा शगून लिया हमने	तुझसे

وَبِمَنْ	مَّعَكَ ؕ	قَالَ	طٰٓئِرُكُمْ	عِنْدَ اللّٰهِ	بَلْ	اَنْتُمْ	قَوْمٌ
और उनसे जो	साथ हैं तेरे	कहा	बदशगूनी तुम्हारी	अल्लाह के पास है	बल्कि	तुम	ऐसे लोग हो

HUDA TV INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تُفْتَنُوْنَ ﴿47﴾	وَكَانَ	فِي الْمَدِيْنَةِ	تِسْعَةُ	رَهْطٍ	يُّفْسِدُوْنَ
तुम आज़माए जा रहे हो	और थे	शहर में	नौ	गिरोह	वो फ़साद करते थे

فِي الْاَرْضِ	وَلَا	يُصْلِحُوْنَ ﴿48﴾	قَالُوْا	تَقَاسَمُوْا	بِاللّٰهِ
ज़मीन में	और ना	वो इस्लाह करते थे	उन्होंने कहा	आपस में क़सम खाओ	अल्लाह की

لَنُبَيِّتَنَّهٗ	وَاَهْلَهٗ	ثُمَّ	لَنَقُوْلَنَّ	لِوَلِيِّهٖ	مَا	شَهِدْنَا
अलबत्ता हम ज़रूर रात को हमला करेंगे उस पर	और उसके घर वालों पर	फिर	अलबत्ता हम ज़रूर कहेंगे	उसके सरपरस्त से	नहीं	मौजूद थे हम

مَهْلِكَ	اَهْلِهٖ	وَاِنَّا	لَصٰدِقُوْنَ ﴿49﴾	وَمَكَرُوْا	مَكْرًا	وَّمَكَرْنَا
हलाकत के वक़्त	उसके ख़ानदान की	और बेशक हम	अलबत्ता सच्चे हैं	और उन्होंने चाल चली	एक चाल	और तदबीर की हमने

مَكْرًا	وَّهُمْ	لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿50﴾	فَانْظُرْ	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ	مَكْرِهِمْ
एक तदबीर	और वो	ना वो शऊर रखते थे	पस देखिए	कैसा	हुआ	अंजाम	उनकी चाल का

اَنَّا	دَمَّرْنٰهُمْ	وَقَوْمَهُمْ	اَجْمَعِيْنَ ﴿51﴾	فَتِلْكَ	بُيُوْتُهُمْ	خَاوِيَةً
बेशक हम	तबाह कर दिया हमने उन्हें	और उनकी क़ौम को	सबके सबको	तो ये	उनके घर हैं	गिरे हुए

بِمَا	ظَلَمُوْا	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً	لِّقَوْمٍ	يَّعْلَمُوْنَ ﴿52﴾
बवजह उसके जो	उन्होंने ज़ुल्म किया	यक़ीनन	इसमें	अलबत्ता एक निशानी है	उन लोगों के लिए	जो इल्म रखते हैं

وَاَنْجَيْنَا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَكَانُوْا	يَتَّقُوْنَ ﴿53﴾	وَلُوْطًا	اِذْ	قَالَ
और निजात दी हमने	उन्हें जो	ईमान लाए	और थे वो	वो डरते	और लूत को	जब	उसने कहा

لِقَوْمِهٖٓ	اَتَاْتُوْنَ	الْفَاحِشَةَ	وَاَنْتُمْ	تُبْصِرُوْنَ ﴿54﴾	اَئِنَّكُمْ	لَتَاْتُوْنَ
अपनी क़ौम से	क्या तुम आते हो	बेहयाई को	हालांकि तुम	तुम देखते हो	क्या बेशक तुम	अलबत्ता तुम आते हो

الرِّجَالَ	شَهْوَةً	مِّنْ دُوْنِ	النِّسَآءِ	بَلْ	اَنْتُمْ	قَوْمٌ	تَجْهَلُوْنَ ﴿55﴾
मर्दों के पास	शहवत के लिए	इलावा	औरतों के	बल्कि	तुम	एक क़ौम हो	तुम जहालत बरतते हो

فَمَا	كَانَ	جَوَابَ	قَوْمِهٖٓ	اِلَّآ	اَنْ	قَالُوْٓا	اَخْرِجُوْٓا	اٰلَ لُوْطٍ
तो ना	था	जवाब	उसकी क़ौम का	मगर	ये कि	उन्होंने कहा	निकाल दो	आले लूत को

مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ	اِنَّهُمْ	اُنَاسٌ	يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿56﴾	فَاَنْجَيْنٰهُ	وَاَهْلَهٗٓ
अपनी बस्ती से	बेशक वो	लोग	वो बहुत पाकबाज़ बनते हैं	तो निजात दी हमने उसे	और उसके घर वालों को

اِلَّا	امْرَاَتَهٗ ۖ	قَدَّرْنٰهَا	مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿57﴾	وَاَمْطَرْنَا	عَلَيْهِمْ
सिवाए	उसकी बीवी के	मुक़द्दर कर दिया हमने उसे	पीछे रहने वालों में से	और बरसाई हमने	उन पर

مَّطَرًا ۚ	فَسَآءَ	مَطَرُ	الْمُنْذَرِيْنَ ﴿58﴾ ع	قُلِ	الْحَمْدُ	لِلّٰهِ	وَسَلٰمٌ	ع 4 14 19
एक बारिश	तो बहुत बुरी थी	बारिश	डराए जाने वालों की	कह दीजिए	सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	और सलाम है	

عَلٰى عِبَادِهِ	الَّذِيْنَ	اصْطَفٰى ؕ	آٰللّٰهُ	خَيْرٌ	اَمَّا	يُشْرِكُوْنَ ﴿59﴾ ؕ
उसके उन बंदों पर	जिन्हें	उसने चुन लिया	क्या अल्लाह	बेहतर है	या जिन्हें	वो शरीक ठहराते हैं

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION